(Operation Tribulation Rescue - Hindi, 20 March 2017)

(www.tribulationrescue.com)

20 मार्च 2017

ऑपरेशन टिंब्यूलेशॅन रेस्क्यू – क्लेश से छुड़ा लेने का प्रचालन

यीशु के वापस आने की चेतावनी देना
जो पीछे छूट गए उन्हें सज्जित करना
संसार को सुसमाचार–प्रचार करना

1. गृह पृष्ठ

2. मैं कैसे उणर पा सकता हू

3. मैंने उणर पाया है... अब क्या करू?

4. क्लेश से बचाने की मार्गदर्शिका – करोड़ों नाश हो रहे ... क्यों?

5. “अन्त समय की घटनाए”

6. हम क्या विश्वास करते हैं

7. बाइबल से सत्य

8. बाइबल की बुनियादी बातें

9. सिपफारिश किए गए स्रोत

10. दर्शन एवं मिशन

11. हमारे बारे में

12. सम्पर्क करें/हमारे साथ जुड़ जाए!

1. गृह पृष्ठ

भविष्य की 12 वे घटनाएं जो संसार को हिला देंगी!

केवल परमेशवर जानता है कि ये घटनाएं कब आरंभ होंगी|
चेतावनी! जब करोडो लोगों का विनाश होगा तो आपको स्वम को सुरक्षित रखना होगा |

1. करोड़ों नाश होंगे (मसीही विश्वशिओं का स्वर्गारोहण)
2. संसार का एक ही शासक उभेरागा
3. संसार के विभिन देश इस्राएल पर आक्रमण करेंगे - परमेश्वर उन्हें नाश करेगा |
4. इस्राएल और ख्रिस्त विरोधी के बीच शान्ति संधि (महा क्लेश का आरंभ)

5. इस्राएल देश में दो भविष्वक्ता (विशेष शक्तियां)

6. यरूशलेम में यहूदियों के मन्दिर का पुनर्निर्माण

7. परमेश्वर के 21 न्याय के दण्ड - अरबों **मारे** जाएगे

8. ख्रिस्त विरोधी का विनाश (उसका मृतकों में से जी उठाना)
9. ख्रिस्त विरोधी संधि तोड़ता है और परमेश्वर के मंदिर को अपवित्र करता है|
10. दो भाविश्वक्ताओं का मरना और मृत्कों में से जी उठाना |
11. पशु का चिन्ह अनिवार्य |
12. यीशु वापस लौटता है - न्याय का दिन

आपके विकल्प क्या हैं?

- उद्धार पाएं|
- प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रचार करें
- ऑपरेशन ट्रिबयुलेश्न गाइड पड़ें |

(अधिक जानकारी के लिय अंत समय की घटनाओं और अंत समय की बाइबिल की भविष्द्वानियाँ पड़ें)

2. मैं उद्धार कैसे पा सकता हूँ?

क्या आप जानते हैं कि बाइबल में बुरा समाचार और अच्छा समाचार दोनों सम्मिलित हैं? बुरा समाचार आपके बारे में कुछ है। शुभ सन्देश परमेश्वर के बारे में है। आइए पहले बुरे समाचार को देखें।

बुरा समाचार

1. प्रत्येक जन पापी है और प्रत्येक जन यीशु के बिना खोया है। ''इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)।

2. पाप का दण्ड मृत्यु है। ''क्योंकि पाप की मशदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)।

शुभ समाचार

1. यीशु आपसे प्रेम करता है। वह आपके लिए मर गया और पुनः जीवित हो उठा ;उसने आपके पापों के दण्ड का मूल्य चुका दियाद्ध। ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)।

2. विश्वास के द्वारा आप उणर पा सकते हैं। ''कि यदि तू अपने मु!ह से 'यीशु को प्रभु' जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उणर

पाएगा'' (रोमियों 10:9)।

प्रश्न: क्या ऐसी कोई बात है जो ठीक अभी मसीह पर उणरकर्ना के रूप में विश्वास करने से रोक रही है?

सुझाई गई प्रार्थना

प्रिय परमेश्वर, मैं अभी आपके पास आता हू। मैं जानता हू कि मैं एक पापी हू। मैं विश्वास करता हू कि यीशु मेरे लिए मरा और जी उठा। ठीक अभी, मैं यीशु मसीह में अपने उणरकर्ना के रूप में विश्वास करता हू!। मुझे क्षमा करने और अनन्त जीवन देने के लिए मैं आपको मान्यवाद देता हू! जो अब मेरे पास है। यीशु के नाम में, आमीन।

यदि ठीक अभी आपने अपना भरोसा यीशु मसीह पर रखा है, शुभ कामनाए और परमेश्वर के परिवार में आपका स्वागत है? आपके सारे पाप क्षमा किए गए और अब मसीह में आपके पास अनन्त जीवन है जो आपसे कभी नहीं लिया जाएगा। इसका अर्थ है कि आपका उणर और अनन्त सुरक्षा परमेश्वर के वचन के सत्य पर आमाारित है, महसूस करने पर नहीं। उणर किसी भी तरह हमारे भले कामों पर निर्भर नहीं करता। ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उणर हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है और न कमोद्व के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इपिफसियों 2: 8–9)। **उद्धार** के इन पदों को कंठस्थ कर लें जिससे कि आप इन्हें दूसरों को बता सकें और अपने उणर के प्रति आश्वस्त हों।

अनन्त जीवन का आश्वासन

उद्धार का आश्वासन पवित्राशास्त्रा में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। एक बार जब आपने उणर पा लिया आप हमेशा के लिए बचाए गए हैं। **चूंकि** आपका **उद्धार** पूर्ण रूप से विश्वास पर आमाारित है, और मसीह ने जो आपके लिए किया, इसका अर्थ है कि आप ऐसा कुछ नहीं कर सकते जो आपके लिए **उद्धार** को खोने का कारण बने। यह मसीह में सच्ची स्वतन्त्राता है।

- **यूहन्ना 5:24:** ''मैं तुम से सच–सच कहता हू!, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।''
- **1 यूहन्ना 5:13:** ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्रा के नाम पर विश्वास करते हो इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।''
- **यूहन्ना 3:16–17:** ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्रा दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा **उद्धार** पाए।''

बाइबल के अतिरिक्त पद

- **प्रेरितों के काम 16:31:** ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू ... **उद्धार** पाएगा।''
- **यूहन्ना 20:31:** ''परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्रा मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।''
- **यूहन्ना 14:6:** ''यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हू! बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहु!च सकता।''

- **रोमियों 1:16:** ''क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए **उद्धार** के निमिन परमेश्वर की सामर्थ्य है।''
- **2 कुरिन्थियों 5:17:** ''इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि हैः पुरानी बातें बीत गई हैं देखो सब बातें नई हो गई हैं।''
- **इपिफसियों 1:13–14:** ''और उस में तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे **उद्धार** का सुसमाचार है और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्रा आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।''
- **यूहन्ना 3:36:** ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का **क्रोध** उस पर रहता है।''
- **प्रेरितों के काम 4:12:** ''किसी दूसरे के द्वारा उणर नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम **उद्धार** पा सकें।''
- **तीतुस 3:5–6:** ''तो उसने हमारा **उद्धार** किया और यह **ध**र्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्रा आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे **उधार्कर्ता** यीशु मसीह के द्वारा हम पर **अधिकाई** से उण्डेला।''
- **यूहन्ना 1:12** ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अमिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।''

3. मैंने उद्धार पाया है... अब क्या?

अब आपको प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं कि जब तक आप सम्पूर्ण बाइबल न पढ़ लें तब तक प्रभु की सेवा आरंभ नहीं कर सकते और अपने विश्वास के बारे में बता नहीं सकते। आप ठीक अभी आरंभ कर सकते हैं। पौलुस प्रेरित के **उद्धार** पाने के बाद वह तुरन्त ही यहूदियों के आरामानालय में (प्रेरितों के काम 9:20),यीशु की घोषणा करने लगा था। परमेश्वर न केवल आपको बल और उत्साह से भर देगा पर बोलने के लिए वचन **(शब्द)** भी देगा। यीशु ने आपके लिए जो किया ह", उसे **आप** अपने **हृदय** से बताना आरम्भ कर दें। प्रभु से पूछें कि वह अपने सम्मान और महिमा के लिए किस रीति से आपका उपयोग कर सकता है।

प्रार्थना करें

''सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में **धन्यवाद** करो क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।'' (1थिस्सलुनीकियों 5:16–18)| ''प्रार्थना में लगे रहो, और **धन्यवाद** के साथ उसमें जागृत रहो।'' (कुलुस्सियों 4:2)| ''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ मार्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16); ''उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई"। (लूका 6:12)| [रोमियों 8:26; इपिफसियों 6:18; इब्रानियों 4:14–16;

2 इतिहास 7:14; पिफलिप्पियों 4: 6–8; मत्ति 6:5–13, 15: 36; मरकुस 1: 35; लूका 5:16; 11:1–13]

बाइबल पढ़ें

बाइबल पढ़ें और परमेश्वर के वचन को याद **करें** । यदि आपके पास एक बाइबल नहीं है, और प्राप्त नहीं कर सकते **हैं**, तो एक उपाय है कि इन्टरनेट से बाइबल के भा**गों** के प्रिन्ट **निकाल** लें, **और** ऐसी मसीही संस्थाओं का पता लगाए जो कम दाम में बाइबल उपल**बध** कराती हैं। यदि आपके पास **समय कम** है**,** तो लूका रचित सुसमाचार (लूका की पुस्तक) पढ़ना आरम्भ **करें| इस पुस्तक में से**, यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान **के विषय**, प्रेरितों के काम की पुस्तक **में से**, कलीसिया के आरंभ होने और विश्वासियों पर सताव **के विषय**; रोमियों की पुस्तक **में से** विश्वास द्वारा **उद्धार के विषय**; **बाइबिल की प्रथम पुस्तक** उत्पनि **में से**, सब कुछ **कैसे आरंभ** हुआ**, उसके विषय**; **बाइबिल की अंतिम** पुस्तक प्रकाशितवाक्य **में से**, सब कुछ **कैसे** अन्त **होगा उसके विषय**; और **बाइबिल के मध्य में पाई जाने वाली**, भजन संहिता की पुस्तक **में से**, सान्त्वना और बल **प्राप्त करने के विषय पढ़ें|** समय **निकाल कर**, बाइबल की उपरोक्त पुस्तकें **अवश्य** पढ़ें और **उसके बाद एक बार फिर से**, आरंभ से**,** पूरा नया और पूरा पुराना नियम पढ़ें। परमेश्वर के वचन का कोई स्थानापन्न नहीं है। एक विश्वासी के रूप में पवित्रा आत्मा यह समझने में आपकी सहायता करेगा जो आप पढ़ रहे हैं, कि **आप** किस प्रकार पवित्राशास्त्रा को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं और यह जान और समझ सकते हैं कि परमेश्वर **आपके जीवन से** क्या चाहता है। व्यवस्थाविवरण 6: 4–8; 17:19; यूहन्ना 8:31–32; यशायाह 55:11; 1 पतरस 3:15; **आदि बाइबिल के पद भी पढ़ें|**

''तेरा वचन मेरे पा!व के लिए दीपक, और मार्ग के लिए उजियाला है।'' भजन संहिता 119:105|
''अपने आपको परमेश्वर **के** ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।'' (2 तीमुथियुस 2:15)|
''मैंने तेरे वचन को अपने **हृदय** में रख छोड़ा है, कि तेरे विरु**ध** पाप न करू।'' (भजन संहिता 119:11)|
''उसकी आज्ञा पालन करने से मैं न हटा, और मैंने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अमिाक काम के जानकर सुरक्षित रखे।'' (अव्यूब 23:12)|
''क्या ही मान्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहताऋ और उसकी व्यवस्था पर रात दिन मयान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ण्तु में पफलता है, और जिसके पने कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सपफल होता है।'' (भजन संहिता 1:1–3)|

''मसीह के वचन को अपने **हृदय** में **अधिकाई** से बसने दो, और **सिद्ध** ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने–अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।'' (कुलुस्सियों 3:16)|

स्थानीय कलीसिया के सदस्य बनें (बादलों पर उठाए जाने के पहल)

एक बाइबल में विश्वास करनेवाली कलीसिया को ढू!ढ़ें और अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने हेतु बपतिस्मा लें। कलीसिया प्रभु की सेवा करने हेतु आपको सज्जित करेगी। एक छोटे समूह या सहभागिता में शामिल हो जाए! और जब आप प्रार्थना करते हैं तो प्रभु में बढ़ें, आरामाना करें और एक दूसरे विश्वासी के साथ संगति करें।

बादलों पर उठाए जाने के बाद

विश्वासियों **की कलीसिया के सदस्य बने** जिससे आप प्रार्थना **के जीवन में और** विश्वास में बढ़ें, **तथा** एक दूसरे की सेवा और सहभागिता करें। **एक अच्छी, विश्वसिओं की** कलीसिया **खोजें** या एक गृह कलीसिया का आरंभ करें और अपने विश्वास के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए बपतिस्मा लें। समस्त बाइबल–के मानने वाले चर्च खाली हो जाएगे (या बन्द कर दिए जा**एंगे**) और मसीहियों के **विरुध** सताव आपको चर्च भवन में सभा करने से रोकेगा। आपकी गृह कलीसिया प्रभु के लिए प्रभावकारी बनी रहने में आपको सज्जित करने में सहायता करेगी।

''और एक दूसरे के साथ इकटठ्ा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों–ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों–त्यों और भी अमिाक यह किया करो।'' (इब्रानियों 10:25)|

''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्रा लोग **सिद्ध** हो जाए, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाए! और एक **सिद्ध** मनुष्य न बन जाए और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाए।'' (इपिफसियों 4:11–13)|

''अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन **हज़ार** मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' (प्रेरितों के काम 2: 41–42)|

सुसमाचार प्रचार करना – शुभ सन्देश बताना

अपने परिवार, अपने मित्राों और जितने **अधिक** लोगों को आप बता सकते है, उन्हें शुभ सन्देश बताए।

''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्रा आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी **हैं**, मानना सिखाओः और देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग **हूँ**।'' (**मत्ती** 28:19, 20)|

''और उनसे कहा यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो।'' (लूका 24: 46–48)|

''तब उसने अपने चेलों से कहा, पके खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वाभी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे।'' (**मत्ती** 9:37–38)|

''वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर–घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने स, कि यीशु ही मसीह है न रुके।'' (प्रेरितों के काम 5: 42)|

4. महाक्लेश से बचाने की मार्गदर्शिका

करोड़ों का विनाश - क्यों?

करोड़ों लोग नष्ट क्यों हो गए? यीशु **अपने** द्वि**ती**य आगमन पर लौटेगा और अपने सब विश्वासियों को स्वर्ग को ले जाएगा। इस घटना (बादलों पर उठाए जा**ने के समय**), की भविष्यद्वाणी**,** बाइबल में लगभग 2000 **वर्षों** पूर्व की गई थी। अतिरिक्त जानकारी के लिए, अन्त-समय की घटनाओं पर जाए| करोड़ों का विनाश- मसीहियों का बादलों पर उठाया जाना**;** कुछ **वर्षों** में यीशु पुनः नये विश्वासियों को बचाने**;** दुष्टों का न्याय करने और सांसारिक राज्य पर शासन करने आएगा। **हमारी** प्रार्थना **है** कि आप उन नए विश्वासियों में से एक हों। "मैं **कैसे उद्धार** प्राप्त कर सकता **हूँ**?", विषय को देखें कि यीशु में एक विश्वासी कैसे बनते हैं। अब यह कि आप पीछे छूट गए हैं, कठिन और चुनौतीपूर्ण समय आगे हैं। महाक्लेश (सात वर्षे) के दौरान अरबों लोग मर जाएगे और दुर्भाग्यवश उनमें से आप एक हो सकते हैं। लोग भयभीत और उलझन में रहेंगे और **उत्तर** पाने की खोज में **लगे होंगे**। आप सब प्रकार के **सिधहंतों** को सुनेंगे **की**, कि उन लाखों के साथ क्या हुआ जो लोप हो गए। वे कह सकते हैं कि परमेश्वर ने ''असहिष्णु'' मसीहियों का न्याय किया, अथवा "एलियन्स"़ उन्हें ले गए| परन्तु बाइबल सत्य को प्रगट करती है|

''क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुझ से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और **प्रधान** स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएगे कि हवा में प्रभ से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:15–18)|

आपको अपने भय और चिन्ता पर विजय पाने के लिए प्रभु की ओर मुड़ना चाहिए, और शान्ति और सान्त्वना पाए जिन्हें केवल वो ही दे सकता है। ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा मान्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाए!। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे ंदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। इसलिए हे भाइयो जो–जो बातें सत्य हैं, और जो–जो बातें आदरणीय हैं, और जो–जो बातें उचित हैं, और जो–जो बातें पवित्रा हैं, और जो–जो बातें सुहावनी हैं, और जो–जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्‌गुण और प्रशंसा की बाते हैं उन पर मयान लगाया करो।'' (पिफलिप्पियों 4: 6–8)।

यह समय पीछे भय में संकुचित होने, दबकने और छिपने का नहीं है। आपको बल और साहस और शान्ति पाने को पुकारना चाहिए जिन्हें केवल प्रभु ही दे सकता है। आपको अपनी परिस्थितियों से **ऊँचा**

उठना चाहिए, अपने भय को, चिन्ता को और शंका को एक ओर हटा दें। यीशु मसीह ने 2000 **वर्षों** पूर्व पहले ही आपके लिए विजय सुरक्षित कर ली थी जब उसने दुःख भोगा और **क्रूस** पर मरा और अपने **उ**पर संसार के पापों को उठा ले गया। मृतकों में से उसका पुनरुत्थान वह प्रमाण था कि उसने पाप, मृत्यु और शैतान पर विजय पाई है। अब आगे को उनकी सामर्थ आपके **ऊपर** नहीं है। यदि किसी कारण से आप महाक्लेश में जीवित नहीं बचते तब आप तुरन्त प्रभु की उपस्थिति में होंगे, शर्त यह है कि यदि आपने यीशु पर **उद्धारकर्ता** के रूप में विश्वास किया है। केवल सात वर्ष बच रहे हैं (इस्राएल – **ख्रिस्त** विरो**धी** की शान्ति **संधि**) कि इसके पहले कि यीशु मसीह **''राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु''** के रूप में अपने लोगों को छुड़ाए, दुष्टों का न्याय करे और अपने सांसारिक राज्य पर शासन करे, हमें ''सब जातियों के लोगों को चेला बनाना है।'' प्रत्येक क्षण को प्रभु यीशु मसीह के लिए सम्मान और महिमा के रूप में गिनें। ऐसे छै अरब लोग हैं जिन्हें यीशु के बारे में सुनना बाकी है, इसलिए जागते रहिए। स्मरण रखें, पहले से ही जानते हैं कि इस महाकाव्य के अन्त-समय की कहानी का अन्त होता है - यीशु जीतता है!

इन अन्तिम दिनों में परमेश्वर सामर्थशाली **ढंग** से काम करनेवाला है, और हम प्रार्थना करते हैं कि आप इस अन्त समय के सुसमाचार विस्फोटन में अपनी भूमिका निभाए! और उस महानतम आत्मजागृति में जो मानव इतिहास में कभी हुई थी हिस्सा बनें। हम आपसे चाहते हैं कि आप अकेले नहीं हैं। यीशु ने कहा, ''...और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।'' (**मत्ती** 28: 20)| आप निश्चित हो सकते हैं कि आप हमारी प्रार्थनाओं में हैं। ''इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।'' (इपिफसियों 6:10)।

आपकी उच्चतम प्राथमिकताए हैं:

उद्धार पायं

उद्धार पाए (पापों से क्षमा और अनन्त जीवन की गारन्टी दी गई) - देखें मैं कैसे उणर पा सकता हू!? और मैंने उणर पाया है... अब क्या?

''कि यदि तू अपने मुह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय **उद्धार** पाएगा।'' (रोमियों 10:9)|
''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)|

''यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हू। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुच सकता।'' (यूहन्ना 14: 6)|

प्रार्थना करें

''सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में **धन्यवाद** करो, क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।'' (1थिस्सलुनीकियों 5:16–18)|

''प्रार्थना में लगे रहो, और **धन्यवाद** के साथ उसमें जागृत रहो।'' (कुलुस्सियों 4:2)|

''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने–अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ : **धर्मी**जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।''
(याकूब 5:16)|

''उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।''
(लूका 6:12)|

[रोमियों 8:26; इपिफसियों 6:18; इब्रानियों 4: 14–16; 2 इतिहास 7: 14; फिलिप्पियों 4: 6–8; **मत्ती** 6:5–13; 15:36; मरकुस 1: 35; लूका 5:16; 11:1–13व|

बाइबल पढ़ें

बाइबल पढ़ें और **बाइबिल** के पदों को याद **करें**। यदि आपके पास एक बाइबल नहीं है, और एक प्राप्त नहीं कर सकते, तो एक उपाय है कि इन्टरनेट से बाइबल के भागों के प्रिन्ट उठा लें। पता लगाए! ऐसी मसीही संस्थाओं का जो कम दाम में बाइबल उपलब्मा कराती हैं। यदि आपके पास करने को बहुत काम है और आप दबाव में हैं तो लूका रचित सुसमाचार ;लूका की पुस्तकद्ध पढ़ना आरम्भ करें ;यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थानद्ध। प्रेरितों के काम की पुस्तक ;कलीसिया के आरंभ होने और विश्वासियों पर सतावद्ध। रोमियों की पुस्तक ;विश्वास द्वारा उणरद्ध। उत्पनि की पुस्तक ;सब कुछ का आरंभ कैसे हुआद्ध। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ;सब कुछ का अन्त कैसे होता हैद्ध और भजन संहिता की पुस्तक ;सान्त्वना और बल प्रदान करती हैद्ध। यदि आप पर समय का दबाव नहीं है तो बाइबल की उपरोक्त पुस्तकें पढ़ें और तब पिफर वापस जाकर आरंभ से पूरा नया नियम पढ़ें और पूरा पुराना नियम पढ़ें। परमेश्वर के वचन का कोई स्थानापन्न नहीं है। एक विश्वासी के रूप में पवित्रा आत्मा यह समझने में आपकी सहायता करेगा जो आप पढ़ रहे हैं कि किस प्रकार पवित्राशास्त्रा को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं और यह जान और समझ सकते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आप करें। ;व्यवस्थाविवरण 6:4–8ऋ 17:19ऋ यूहन्ना 8:31–32
यशायाह 55:11ऋ 1 पतरस 3:15द्ध।

''तेरा वचन मेरे पा!व के लिए दीपक, और मार्ग के लिए उजियाला है।'' (भजन संहिता 119:105)|

''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।'' (2 तीमुथियुस 2:15)|

''मैंने तेरे वचन को अपने **हृदय** में रख छोड़ा है, कि तेरे **विरुध** पाप न **करूँ**।'' (भजन संहिता 119:11)|
''उसकी आज्ञा पालन करने से मैं न हटा, और मैंने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं **अधिक** काम के जानकर सुरक्षित रखे।'' (अव्यूब 23:12)|

''क्या ही मान्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन **मनन** करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी **ऋतू** में फलता है, और जिसके **पत्ते** कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सपफल होता है।''(भजन संहिता 1:1–3)|

''मसीह के वचन को अपने **हृद्य** में **अधिकाई** से बसने दो, और **सिद्ध** ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ

और चिताओ, और अपने–अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।'' (कुलुस्सियों 3:16)|

एक कलीसिया में शामिल **हो जाएँ**

दूसरे विश्वासियों को ढू!ढ़ निकालें जिससे कि आप एक साथ मिलकर प्रार्थना करें, आरामाना करें, उन्नति करें, सेवा करें और सहभागिता करें। किसी अच्छी गृह कलीसिया को तलाशें अथवा एक गृह कलीसिया का आरंभ करें और अपने विश्वास के सार्वजनिक प्रदर्शन के रूप में बपतिस्मा लें। सब बाइबल–सम्मत कलीसियायें खाली हो जाएगी (या **यहाँ** तक कि बन्द हो जाएगी) और मसीहियों पर सताव आपको एक चर्च इमारत (भवन) में मिलने से रोकेगा। ऐसे में आपकी गृह कलीसिया आपको प्रभु के लिए प्रभावकारी बनने में सज्जित करेगी।

''और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अध्कि यह किया करो।'' (इब्रानियों 10:25)|

''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्रा लोग **सिद्ध** हो जाए! और सेवा का काम किया जाए और **मसीह** की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सबके सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाए, और एक **सिद्ध** मनुष्य न बन जाए, और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाए!।'' (इपिफसियों 4:11–13)|

"अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन **हज़ार** मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' (प्रेरितों के काम 2:41–42)

सुसमाचार–प्रचार–शुभ सन्देश बताएं

इसके पहले कि यीशु पृथ्वी पर वापस लौटे (इस्राएल–रव्रीस्त विरोमाी की शान्ति सन्मिा के सात वषो बाद) **जहाँ** तक संभव हो अमिाक से अमिाक लोगों को यीशु मसीह के बारे में शुभ सन्देश को बताए!। आप मानव इतिहास में सबसे महान् आत्मजागृनि का भाग बन सकते हैं। जहा तक संभव हो इस वैबसाइट से अमिाक से अमिाक जानकारी की प्रतिलिपि बना लें, कहीं यह बन्द न कर दी जाए। जानकारी को अपने कम्प्यूटर में रख लें, इसे "ईमेल" द्वारा भेजें, इनकी प्रिन्टिड प्रतिया **बना** लें, और जो कुछ भी आप कर सकते हैं करें, और फिर इसे **अधिक से अधिक** लोगों को बाटें। इन पदों को पढ़ें :

- ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्रा आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।'' (**मत्ती** 28:19, 20)|
- ''और उनसे कहा यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो।'' (लूका 24: 46–48)|
- ''तब उसने अपने चेलों से कहा, पके खेत तो बहुत हैं पर मशदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी

से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए **मजदूर** भेज दे।'' (**मत्ती** 9:37—38)|

- ''वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर—घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रुके।'' (प्रेरितों के काम 5: 42)|

चेतावनी! पशु की छाप को न लें : ''फिर इनके बाद एक और, तीसरा स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहते हुए आया, जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे और अपने हाथ पर उसकी छाप ले वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा, जो उसके **क्रोध** के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। उनकी पीड़ा का **धुआं** युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।'' (प्रकाशितवाक्य 14: 9—11)|

''अतः पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया। तब उन मनुष्यों के, जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुःखदाइ फोड़ा निकला।'' (प्रकाशितवाक्य 16: 2)। (प्रकाशितवाक्य 13: 7; 19: 20; 20: 4)|

5. अन्त-समय की घटनाएं

लेखकों ने अथक परिश्रम किया है कि परमेश्वर के वचन की सही—सही व्याख्या करें।

इस्राएल का पुनः जन्म

इस्राएल देश का पुनः जन्म पवित्राशास्त्र में सबसे **अधिक** भविष्यद्वाणी की गई घटनाओं में से एक है। इस्राएल पुनः एक बार एक देश बन गया, मई 14,1948 (**यहूदी कलंडर**, योम हा' आत्शमॉत **की तारीख़ 5 ल्यार** 5708 **को**)| हम विश्वास करते हैं कि इस्राएल की पुनः स्थापना अन्त समय की घटनाओं के लिए गणना **का** आरंभ है। इस्राएल की पुनः स्थापना देश की आत्मिक जागरूकता और आत्मजागृति से अक्सर जोड़ा जाता है (यहेजकेल 11:14—21; 36: 22—38; 37: 1—28; 39: 25—29), देशों के न्याय के दण्ड से (योएल 3:1—2; यहेजकेल 28:24—26), महाक्लेश से (यिर्मयाह 30:1—11), राजा दाउद का शासन और मसीह के राज्य करने से जुड़ा है।

परमेश्वर इस्राएल के साथ शान्ति की अनन्तकाल की वाचा **बंधेगा**, और **दाउद** उनका सदाकाल का राजा होगा (यहेजकेल 34: 24; 37: 24—28; यिर्मयाह 30: 9; होशे 3: 5)। मसीह (एक मार्मी शाख या डाली) संसार के सब लोगों और देशों पर राज्य करेगा (यिर्मयाह 23:1—8; 33:14—16; यशायाह 4:2—6; 11:1—5; 53:2)| जकर्याह 3:8—9; 6:12—13; यहेजकेल 20:33—44; प्रकाशितवाक्य 20:4।

इस्राएल का पुनः जन्म अतिरिक्त पद (यशायाह 11:11—12; यहेजकेल 34:11—16; 38:8; दानियेल 9: 24—27)|

लाखों—करोड़ों नाश होंगे मसीहियों का बादलों पर उठाया जाना

लाखों—करोड़ों लोग क्यों नाश होंगे? इसके पहले कि सात वर्षीय महाक्लेश आरंभ हो यीशु का द्वितीय

आगमन होगा और वह अपने साथ समस्त विश्वासियों को स्वर्ग पर ले जाएगा। अरबों लोग पीछे छूट जाएगे और वे **भयाक्रान्त** और उलझन से भरे होंगे। विश्वासी लोगों के लोप हो जाने के बहुत से **सिधांत** प्रस्तावित किए जाएगे कि उनके लोप या गायब होने को समझाए, परन्तु बाइबल सत्य को प्रगट करती है। बादलों पर उठा लिया जाना बाइबल में 2000 वषो पूर्व बता दिया गया (भविष्यद्वाणी की गई थी) (यूहन्ना 14:1–3; फिलिप्पियों 3: 20–21; 2थिस्सलुनीकियों 2:1–12; 2 पतरस 3: 3–18; प्रकाशितवाक्य 3:10–11)।

''क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी–आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार, और **प्रधान** स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:15–17)|

''देखो मैं तुम से भेद की बात कहता हूं हम सब नहीं सोएगे परन्तु सब बदल जाएगे और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएगे, और हम बदल जाएगे।'' (1 कुरिन्थियों 15: 51, 52)|

''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्रा, परन्तु केवल पिता। जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह **जहाज़** पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो **स्त्रियाँ** चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। पर यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता, और अपने घर में **सेंध** लगने न देता। इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।'' **(मत्ती** 24:36–44)|

''पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, ''कुशल है, और कुछ भय नहीं,'' तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा और वे किसी रीति से न बचेंगे। पर हे भाइयो, तुम तो **अंधकार** में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े। क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो हम न रात के हैं, न **अंधकार** के हैं। इसलिए हम दूसरों के समान सोते न रहें, पर जागते और **सावधान** रहें। क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं। पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और **उद्धार** की आशा का टोप पहिनकर सावमाान रहें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें **क्रोध** के लिए नहीं, परन्तु इसलिए ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **उद्धार** प्राप्त करें। वह हमारे लिए इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीए। इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो ओर एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:1–11)|

क्या बादलों पर उठाए जाने के बाद बहुत सारे लोग **उद्धार** पाएगे? बाइबल स्पष्ट दिखाती है कि अन्तिम समयों में बहुत से लोग **उद्धार** पाएगे और बहुत से प्रभु यीशु में विश्वास करने के कारण अपने जीवन गवा देंगे। अन्त समयों में विशाल आत्मजागृनि होगी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्वर्ग में विशाल संख्या में विश्वासियों के होने का वर्णन करती है जो महाक्लेश में से निकलकर आए हैं।

''इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्रा पहने और अपने हाथों में खजूर की डालिया लिए हुए सिंहासन के सामने और मेमने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, **उद्धार** के लिए हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने का जयजयकार हो ... ये वे हैं, जो उस महाक्लेश में से निकलकर आए हैं इन्होंने अपने—अपने वस्त्र मेमने के लहू में **धोकर** श्वेत किए हैं ... वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे, और न उन पर **धूप** न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी रखवाली करेगा, और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा और परमेश्वर उनकी आखों से सब आसू पोंछ डालेगा।'' (प्रकाशितवाक्य 7: 9—17)।

उस समय संसार में बहुत से विश्वासी होंगे कि दृीस्त **विरोधी** संसार के इतिहास में सबसे शक्तिशाली राज्य का अगुआ—नेता—महाक्लेश के दूसरे भाग के दौरान परमेश्वर के पवित्र लोगों से **युद्ध** करेगा (प्रकाशितवाक्य 13: 7; दानिव्येल 7: 21—22;)। (यूहन्ना 16: 2; प्रकाशितवाक्य 6:9—11; 15: 2—4; 20: 4—6)।

संसार का एक ही शासक उभरता है (महान बाबुल)

मसीही विश्वशिओं के स्वर्गारोहण के बाद संसार में, सम्ह्बव्तः जो खलबली मचेगी उसके कारण संसार में विश्व की एक ही सरकार बनाने के लिय सर्व सम्मति गोगी, वाही "महान बाबुल" होगा जिसमे 10 राज्य (क्षेत्र) होंगे और इस अंतिम समय के शासन पर दस राजा राज्य करेंगे (दानिएल 7; प्रकाशितवाक्य 17-18)| यह साम्राज्य सबसे शक्तिशाली होगा और "...सारी प्रथ्वी को नाश करेगा, और दॉवकर चूर-चूर करेगा (दानिएल 7:23)| अंत समय के महान बाबुल के विषय बाइबिल में कई प्रकार से व्याख्या की गई है| उसे बहुत भयानक और महान शक्तिशाली पशु बताया गया है, जो, महान समस्या के दूसरे भाग में, मसीह विरोधी और शैतान के साथ लगभग मिल जायगा| **प्रकाशितवाक्य 17:1-18 में उसे वैश्या और झूटे धर्म प्रणाली कहा गया है| यह वैश्या परमेश्वर के पवित्र लोगो से घृणा करेगी, अपने अनैतिक व्यव्हार से भ्रष्ट करेगी, वह बहुत धनवान होगी, संसारिकता से भरी होगी और दुष्टता से परिपूर्ण होगी| "यह स्त्री बैंजनी और किरिमजी कपड़े पहिने थी, और सोने और बहुमोल मणियों और मोतियों से सजी हुई थी| उसके हाथ में सोने का एक कटोरा था जो घृणित वसुओं से और उसके वैभिचार की वस्तुओं से भरा हुआ था| और उसके माथे पर यह नाम लिखा था, 'भेद-बड़ा बाबुल प्रथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता'|" (प्रकिश्त्वाक्य 17:4-5)|**

महान बाबुल, एक ऐसा महान नगर भी होगा जोस विश्व के राजाओं पर राज्य करेगा (प्रकिशित्वाक्य 17:18)| वह, "...दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा..." होगा|" (प्रकिशित्वाक्य 18:2|" संसार के व्यापारी उसकी सम्पन्नता से अमीर बनेंगे और जातियां "...उसके व्यभिचार की कोपोमय

मदिरा से पियेंगे…" (प्रकिशित्वाक्य 14:8; 18:3)| वे सब जिनके पास जलपोत हैं, उसकी संपत्ति के कारण अमीर होंगे (प्रकिश्त्वाक्य 18:17-19)|

महान बाबुल बहुत से विश्वासियों के सताव और उनकी मौत के लिए ज़िम्मेदार होगा और उस पर परमेश्वर का भयंकर प्रकोप का सामना करेगा क्यांकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच चुके होंगे| वह स्त्री "…पवित्र लोगों के लोहू और यीशु के गवोहों के लोहू से मतवाली…" होगी, और परमेश्वर उसके अपराधों को भूलेगा नहीं| (प्रकाशितवाक्य 16:19; 17:6; 18:3)| "इस कारण एक ही दिन में उस पर विपतियाँ आ पड़ेंगी, अर्थात मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जायगी, क्योकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है|" (प्रकिश्त्वाक्य 18:8)|

देश इस्राएल पर आक्रमण करते हैं… परमेश्वर उन्हें नाश करता है

गोग (संभवतः रूस को बताता **है**) और अनेक देश विशाल सेना के साथ इस्राएल पर आव्मण करेंगे। **यह युद्ध, संभवतः, विश्वसिओं के ऊपर उठाय जाने और इसरायली-ख्रीस्ट विरोधी संधि के पश्चात् होगा |** यहेजकेल 38 **और 39 अध्याय में इस** लड़ाई **का वर्णन, और यह कि परमेश्वर किस प्रकार अद्भुत रीती से इस्राएल के लोगों को बचाता है| यहेजकेल 38 के युद्ध के दौरान, परमेश्वर की अद्भुत समर्थ का ऐसा प्रदर्शन होगा कि ऐसा संसार में किसी ने कभी नहीं देखा होगा | अंत समय की इस अत्याद्धिक महत्वपूर्ण घटना का परीणाम यह होगा कि समस्त विश्व के लोग यह जान जाएँगे कि इस्राएल का अति पवित्र, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही प्रभु है और इस्राएलिओ के बीच केवल उसी के पवित्र नाम को महिममित किया जायगा | उस समय, महा क्लेश के आरंभ होने से पहले, बहुत से लोगों के पास प्रभु यीशु पर विशवास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा |**

''जैसे बादल भूमि पर छा जाता है, वैसे ही तू मेरी **प्रजा** इस्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा। इसलिए हे गोग, अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा कि मैं तुझ से अपने देश पर इसलिए चढ़ाई **करूँगा**, कि जब मैं जातियों के देखते तेरे द्वारा अपने को पवित्र **ठहरूंगा**, तब वे मुझे पहिचान लेंगे।'' (यहेजकेल 38:16)।
''जिस दिन इस्राएल के देश पर गोग चढ़ाई करेगा, उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख से प्रगट होगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैंने जलजलाहट और **क्रोध** की आग में कहा कि निःसन्देह उस दिन इस्राएल के देश में बड़ा भूकम्प होगा। मेरे दर्शन से समुद्र की मछलिया और आकाश के पक्षी मैदान के पशु और भूमि पर जितने जीवजन्तु रेंगते हैं, और भूमि के **ऊपर** जितने मनुष्य रहते हैं, सब काप उठेंगे और पहाड़ गिराए जाएगे और चढ़ाइया नष्ट होंगी, और सब दीवारें गिरकर मिट्टी में मिल जाएगी। परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसके **विरुद्ध** तलवार चलाने के लिए अपने सब पहाड़ों को पुकारूगा और हर एक की तलवार उसके भाई के **विरुद्ध** उठेगी। मैं मरी और खून के द्वारा उससे मुक़दमा लडूगा और उस पर और उसके दलों पर, और उन बहुत सी जातियों पर जो उसके पास होंगी, मैं बड़ी झड़ी **लगाऊंगा** और ओले और आग और गन्ध्क **बर्सौंउंगा** इस प्रकार मैं अपने को महान् ओर पवित्र **ठहराऊंगा** और बहुत सी जातियों के सामने अपने को प्रगट करूगा। तब वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ।'' (यहेजकेल 38:18–23)।

''तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इस्राएल के पहाड़ पर मार डाला जाएगा मैं तुझे भाति–भाति के मांसाहारी पक्षियों और वन पशुओं का आहार कर दूगा। तू खेत में गिरेगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैं मागोग में और द्वीपों के निडर रहनेवालों के बीच आग **लगाऊंगा** और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा **हूँ**। मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच अपना नाम प्रगट करूगा और अपना पवित्रा नाम फिर अपवित्र न होने दूगा तब जाति–जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा, इस्राएल का पवित्र **हूँ**। यह घटना होनेवाली है और वह हो जाएगी परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी चर्चा मैंने की है।'' (यहेजकेल 39: 4–8)।

इस्राएल और ख्रीस्त विरोधी के बीच में शान्ति संधि (महा संकट का आरंभ)

यहेजकेल 38 की लड़ाई **के बाद, अंत में ख्रिस्त विरोधी की पहचान हो ही जायगी|** इस्राएल और **ख्रिस्त विरोधी** के बीच में सात वषो के लिए शान्ति **संधि** की वाचा **बांधी** जाएगी। शान्ति **संधि** पर हस्ताक्षर करना शासकीय रूप से सात वषो के महाक्लेश का आरंभ होगा| (दानिय्येल 9:27)। **यह अंत-समय की एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि संधि पर हस्ताक्षर करने के साथ ही सात वर्ष के महक्लेश का समय आरंभ होगा|**

आरंभ में ख्रिस्त विरोधी महान बाबुल के 10 राजाओं में से नहीं होगा| दानिएल 7:8; 20; 24 के अनुसार, ख्रिस्त विरोधी इन 10 राजाओं के बाद, एक छोटे सींघ के समान उभरेगा जो, "...पहिलों से भिन्न...जो तीन राजाओं को गिरा देगा|" उसके बाद बाकि सभी राजा भी ख्रिस्त विरोधी द्वारा पराजित हो जाएँगे और फिर वह, महक्लेश के मध्य तक, महान बाबुल का सम्राट बना रहेगा| वह नियत समयों और कानूनों को बदलने का प्रयास करेगा, अपने पिता परमेश्वर का इनकार करेगा, एक संसार राज्य का नेतृत्व करेगा, अहंकार से बोलेगा, उसका भय माना जाएगा, उसके एक भयंकर घाव होगा परन्तु वह फिर जीवित हो उठेगा, विश्वासियों के प्रति **युद्ध** करेगा, विश्वासियों को सताएगा और मार डालेगा, समस्त देवताओं से स्वयं को उन्नत करेगा और अपनी महिमा कराएगा, ईश्वरों के परमेश्वर के **विरुध** ऐसी–ऐसी बातें कहेगा जो पहले कभी सुनी नहीं **गईं**, और उसकी पूजा उपासनाद्ध की जाएगी (प्रकाशितवाक्य 13:1–10, 19:1–21, 20:1–15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1–12; **मत्ती** 24:15; दानिय्येल 7: 7–28; 8: 23–26; 9: 24–27; 11: 36–45; 12:1–13; 1यूहन्ना 2:18–27)।

इस्राएल में दो भविष्यद्वक्ता (विशेष शक्ति)

परमेश्वर के द्वारा दो भविष्यद्वक्ता (साक्षी) नियुक्त किए जाएगे, और वे टाट पहने 1,260 दिनों तक भविष्यद्वाणी करेंगे। परमेश्वर उन्हें विशेष सामर्थ्य देगा। ''यदि कोई उनको हानि पहुचाना चाहता है, तो उनके मुह से आग निकलकर उनके बैरियों को भस्म करती है और यदि कोई उनको हानि पहुचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति **से** मार डाला जाएगा। उन्हें **अधिकार** है कि आकाश को बन्द करें, कि उनके भविष्यद्वाणी के दिनो में मेंह न बरसे और उन्हें सब पानी पर **अधिकार** है कि उसे लहू बनाए, और जब–जब चाहें तब–तब पृथ्वी पर हर प्रकार की **विपत्ति** लाए'' (प्रकाशितवाक्य 11: 3–6)।

यरूशलेम में यहूदी मन्दिर पुनर्निर्मित (पुनः बनाया गया)

यहेजकेल 38 की लड़ाई के दौरान, पत्थर (चटट्ान) का जो गुम्बज (**मस्जिद**) जो कि वर्तमान में यरूशलेम में यहूदियों के मन्दिर के स्थान पर है, उसे संभवतः नष्ट कर दिया जाएगा और एक नये मन्दिर (**तीसरे**

मन्दिर) के निर्माण को संभव बनाया जाएगा। यह केवल इसलिए संभव होगा क्योंकि इस्राएल के शत्रु परमेश्वर द्वारा नष्ट कर दिए जाएगे और **ख्रिस्त विरोधी** सुरक्षा देने की प्रतिज्ञा करेगा। शान्ति के थोड़े समय के अन्दर ही शीघ्रता से निर्मित किया जाएगा क्योंकि बाद में हम पढ़ते हैं कि **ख्रिस्त विरोधी** बलिदान चढ़ाए जाने को बन्द करवा देगा और **संधि** के साढ़े तीन **वर्ष** बाद यह करेगा, **यहाँ** तक कि वह मन्दिर को **अशुद्ध** करेगा (दानिव्येल 9:24–27; 12:11; 2थिस्सलुनिकियों 2: 3–4)|

परमेश्वर के 21 न्याय के दण्ड - (अरबों मरते हैं)

महाक्लेश के दौरान अरबों लोग मर जाएगे (प्रकाशितवाक्य 6:8; 9:15)। ''यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएगे'' (**मत्ती** 24: 22)। परमेश्वर के 21न्याय के दण्डों में सात मुहरों, सात तुरहियों और सात कटोरों के न्याय के दण्ड सम्मिलित हैं। (प्रकाशितवाक्य 6:1–17; 8:1–13; 9:1–21; 11:15–19; 15:1–8; 16:1–21)।

सात मुहरों के न्याय

इस्राएल–**ख्रिस्त विरोधी** शान्ति **संधि के थोड़े** समय **बाद कुछ समय के लिय** शान्ति **होगी|** फिर इसके बाद **युद्ध** होंगे, अकाल पड़ेंगे, भयंकर महंगाइ, **विपत्तियाँ**, संसार की जनसंख्या का एक चौथाई नष्ट हो जाएगा, विश्वासियों पर भयंकर सताव होगा, भूकम्प होंगे और सूर्य, चान्द और तारों में गड़बड़िया होंगी (प्रकाशितवाक्य 6:1–17; 8:1–6)।

सात तुरहियों का न्याय

तुरहियों के न्याय के दण्ड में सम्मिलित है – आग मिश्रित ओलों का गिराया जाना जिनमें लहू मिला है और पृथ्वी एक तिहाई जल जाएगी। आग–सा जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया। समुद्र का एक तिहाई लोहू हो जाएगा। समुद्र के एक तिहाई प्राणी मर जाएगे और एक तिहाई **जहाज़** नष्ट हो जाएगे। एक बड़ा जलता हुआ तारा स्वर्ग से टूट कर नदियों की एक तिहाई पर और पानी के सोतों पर आ पड़ा और पानी को विषैला कर दिया। सूर्य, चान्द और तारों की एक तिहाई पर **विपत्तियाँ** आएगी और उनका एक तिहाई भाग **अँधेरा** हो जाएगा। पैशाचिक टिड्डिया!, बिच्छु, **विपत्ती (मानव जाति भी** एक तिहाई मर जाएगी) और **युद्ध** होगा। (प्रकाशितवाक्य 8:1–13; 9:1–21; 11:15–19)।

सात कटोरों के न्याय

इन सात कटोरों के न्याय के दण्ड के साथ परमेश्वर का प्रकोप शान्त हो गया| (प्रकाशितवाक्य 15:1) कटोरों के न्याय के दण्ड में सम्मिलित है **वे** मनुष्य जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे उन पर एक प्रकार का बुरा और दुःखदाई फोड़ा निकला। समुद्र लहू बन गया और सब **जीवधारी** मर गए। फिर **नदियाँ** और पानी के सोते भी लहू बन गए। चौथे स्वर्गदूत ने सूर्य पर अपना कटोरा उण्डेला और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का **अधिकार** दिया गया। मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए। फिर पाचवें स्वर्गदूत ने पशु के सिंहासन पर अपना कटोरा उण्डेला और उसके राज्य पर **अँधेरा** छा गया। लोग पीड़ा के मारे अपनी–अपनी जीभ चबाने लगे, उनके फोड़े निकल आए। **छटवें** स्वर्गदूत ने फरात महानद पर कटोरा उण्डेला और उसका पानी सूख गया। फिर अजगर (**ड्रैगन**) के मुह से, उस पशु के मुह से और उस झूठे भविष्यद्वक्ता

के मुह से तीन **अशुद्ध** आत्माए मेंढ़कों के समान निकलीं। ये संसार के सब राजाओं को हरमागिद्दोन पर परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिए इकट्ठा करेंगी। फिर जब **सातवाँ** कटोरा हवा पर उण्डेला गया तब बिजली चमकी, भयंकर भुईडोल हुआ और एक–एक मन के ओले गिरे (पढ़ें, प्रकाशितवाक्य 15 **और** 16 अध्याय)।

ख्रिस्त विरोधी मार डाला गया (मृतकों में से जी उठता है)

ख्रिस्त विरोधी मार डाला जाएगा और मृतकों में से जी उठेगा। शैतान (बड़ा अजगर, ड्रैगन) **ख्रिस्त विरोधी** (पशु) को अपनी शक्ति देगा साथ ही महाक्लेश के दूसरे भाग में अपना सिंहासन और बड़ा **अधिकार भी** देगा। ''उसके सिरों में से एक पर एक बड़ा घाव था, मानो वह मरने पर है, पिफर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे–पीछे अचम्भा करते हुए चले। लोगों ने अजगर, उस पशुद्ध की पूजा की क्योंकि उसने पशु को अपना **अधिकार** दे दिया था, और यह कहकर पशु की पूजा की ''इस पशु के समान कौन है?'' ''कौन इससे लड़ सकता है।'' बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का **अधिकार** दिया गया। उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिए मुह खोला कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग पर रहनेवालों की निन्दा करे। उसे यह भी **अधिकार** दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल और लोग और भाषा और जाति पर **अधिकार** दिया गया। पृथ्वी के वे सब रहनेवाले, जिनके नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए जो जगत की उत्पनि के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।'' (प्रकाशितवाक्य 13ः 3–8; प्रकाशितवाक्य 13ः12)।

ख्रिस्त विरोधी संधि तोड़ता है और मंदिर को दूषित करता है

महाक्लेश के सात वषो के ठीक ममय में **ख्रिस्त-विरोधी** इस्राएल के साथ **बांधी** वाचा (**संधि**) को तोड़ देगा और यरूशलेम में मन्दिर को घृणित वस्तुओं से दूषित करेगा (दानिव्येल 9ः27; **मत्ती** 24ः15; 2 थिस्सलुनीकियों 2ः 3–4)। परमेश्वर के पवित्र लोग महाक्लेश के दूसरे साढ़े तीन वषो में उसके हाथों से छुड़ाए जाएगे (दानिव्येल 7ः25; प्रकाशितवाक्य 13ः 5–8)।

दो भविष्वक्ता मारे जाते हैं (बाद में जी उठते हैं)

जब दो भविश्वक्ताओं (साक्षीयों) ने येरुशलेम में अपनी साक्षी का कम समाप्त कर दिया, तो, महक्लेश के मध्य में, पशु उन पर आक्रमण करके उनकी हत्या कर देगा| संसार के अधिकांश लोग उनकी मौत का जश्न मनाएंगे क्योंकि ये दोनों इन सबको सताते थे| परन्तु परमेश्वर उन्हें साढ़े तीन दिन के बाद जीवित करता है और वे बादलों में स्वर्ग चले जाते हैं| उसी समय येरुशलेम में बड़ा भूकंप आयेगा और येरुशलेम का दसवां हिस्सा नष्ट हो जायगा और सात हज़ार लोगों की मौत हो जायगी| (मालकी 4:5; प्रकाशितवाक्य 11:3-13)|

पशु की छाप और झूठा भविष्यद्वक्ता

झूठा नबी दूसरे पशु के रूप में भी जाना गया। और **ख्रिस्त-विरोधी** की उपस्थिति में उसके समस्त **अधिकार**

का उपयोग करेगा। वह बड़े–बड़े **चिन्ह** दिखाएगा और लोगों से **ख्रिस्त-विरोधी** की पूजा कराएगा और पशु की छाप लोगों के हाथ या उनके माथे पर लगवाएगा। ''फिर मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेमने के से दो सींग थे, और वह अजगर (ड्रेगन) के समान बोलता था। वह उस पहले पशु का सारा **अधिकार** उसके सामने काम में लाता था और पृथ्वी और उसके रहने वालों से उस पहले पशु की, जिसका प्राण–घातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था। वह बड़े–बड़े **चिन्ह** दिखाता था, यहा तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। उन **चिन्हों** के कारण, जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का **अधिकार** उसे दिया गया था, वह पृथ्वी के रहनेवालों को भरमाता था और पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु के तलवार लगी थी वह जी गया है, उसकी मूर्ति बनाओ। उसे उस पशु की मूर्ति में प्राण डालने का **अधिकार** दिया गया कि पशु की मूर्ति बोलने लगे, और जितने लोग उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। उसने छोटे–बड़े, मानी–कंगाल, स्वतन्त्रा–दास सब के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक–एक छाप करा दी, कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो, अन्य कोई लेन–देन न कर सके। ज्ञान इसी में हैः जिसे **बुधि** हो वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छै सौ छियासठ है।'' (प्रकाशितवाक्य 13:11–18)।

चेतावनी! पशु के अंक की छाप न लगवाए! ''फिर इनके बाद एक और, तीसरा स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, 'जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा, जो उसके **क्रोध** के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और **गंधक** की पीड़ा में पड़ेगा। उनकी पीड़ा का **धुआं** युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा'।'' (प्रकाशितवाक्य 14:9–11)। ''अतः पहले स्वर्गदूत ने **जाकर** अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया। तब उन मनुष्यों के, जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुःखदाई फोड़ा निकला।'' (प्रकाशितवाक्य 13:7; 16:2; 19:20 **और** 20:4)।

यीशु मसीह पृथ्वी पर लौटता है (न्याय का दिन)

महाक्लेश (इस्राएल–ख्रिस्त–विरोधी की शान्ति सन्धि के सात वर्ष पश्चात्) के अन्त पर ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'', अपने चुने हुए लोगों को छुड़ाने, दुष्टों का न्याय करने और पृथ्वी पर शासन करने **के लिए** पृथ्वी पर लौटता है| ख्रिस्त–विरोधी, पृथ्वी के राजा और उनकी सेनाए परमेश्वर के विरुध युध करने को इकट्ठे होएंगे। ख्रिस्त–विरोधी और झूठा नबी पकड़ लिए जाएगे और उन्हें आग और गन्माक की **धधकती** झील में जीवित डाल दिया जाएगा और पृथ्वी की सेनाए नष्ट की जाएगी। फिर शैतान को एक हजार **वर्षों** के लिए बान्ध दिया जाएगा और पाताल में बन्द कर दिया जाएगा। समस्त देश यीशु के न्याय सिंहासन के सामने न्याय किए जाने के लिए इकट्ठे किए जाएगे। अविश्वासियों को अनन्तकाल का दण्ड दिया जाएगा, परन्तु मार्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे''; मत्ति 25: 31–46)| (प्रकाशितवाक्य, अधयाय 19–20; यशायाह 34:1–17; 66:15–17; दानिय्येल 12:1–13; योएल 2: 28–32; 3:1–17; जकर्याह, अधयाय 12–14; लूका 17:20–37; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12; 2:1–12; तीतुस 2:11–14|

प्रभु यीशु मसीह के प्रथ्वी पर पुनः लौटने को, सेल फ़ोन में दिए गए "लीप इयर" के कलेंडर के आधार पर, आसानी से पता लगाया जा सकता है | (हर वर्ष में 360 दिन) इस्राएल– **ख्रिस्त-विरोधी** की शान्ति **संधि** के सात वर्ष पश्चात**, प्रभु यीशु मसीह प्रथ्वी पर फिर लौटेंगे** (दानिएल 9:27). **इन सात वर्षों के 2,520 दिन** (2 x 1,260) **या ठीक 360 सप्ताह बनते हैं** (प्रकिशत्वाक्य 11:3; 12:6). **महाक्लेष का मद्ध्य समय इस** 180 **सप्ताह.**

अन्त समयों के बारे में, यीशु और दूसरों के वचन

अन्त समय की घटनाओं की सबसे विस्तारित और वर्णनात्मक भविष्द्वाणिया स्वयं यीशु के द्वारा कही **गईं**। पहली बात जो यीशु अपने शिष्यों से कहता है : ''सावमाान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए, क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह **हूँ"**, और बहुतों को भरमाएगे।'' (**मत्ती** 24ः 4–5)। वश्वासियों के बादलों पर उठा लिए जाने के बाद एक भी विश्वासी पृथ्वी पर न छूटेगा। झूठे मार्म और **धोखा** बहुतायत से होगा। यीशु **युधों**, अकालों के पड़ने, भूकम्पों के आने, झूठे नबियों, दुष्टता, घृणा और विश्वासियों के सताए जाने, सुसमाचार के प्रचार, **ख्रिस्त-विरोधी** द्वारा मन्दिर को दूषित किए जाने, महाक्लेश, और पृथ्वी पर ''राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु'' के रूप में लौटने के विषय में बोलता है। (**मत्ती** 24ः1–51; 25ः1–46; मरकुस 13ः1–37; लूका 17ः20–37; 21ः5–36; 2तीमुथियुस 3ः1–9 (यीशु के शब्द नहीं) 2 पतरस 3ः1–18 (यीशु के शब्द नहीं)|

144,000 यहूदी परमेश्वर द्वारा उसकी सेवा के लिए ठहराए गए

स्वर्गदूत 144,000 परमेश्वर के सेवकों पर छाप लगाएगे, जिसमें मेमने (यीशु) और उसके पिता का नाम (परमेश्वर) सम्मिलित होगा। ये 144,000 यहूदी इस्राएल के बारह गोत्रों में से होंगे जो परमेश्वर द्वारा उसकी सेवा निमिन, सुसमाचार प्रचार करने सहित ठहराए जा सकते हैं। (प्रकाशितवाक्य 7ः1–8; 14ः1–5)।

सहस्राब्दि (1000 वर्ष)

यीशु पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना करेगा जहा से वह एक **हज़ार** वषो के लिए संसार के सब लोगों और देशों पर राज्य करेगा। उसके राज्य की विशेषता को न्याय, **धार्मिकता** और उसके अकाट् या अत्यमिाक प्रेम द्वारा **आँका** गया है। समस्त सृष्टि में सामंजस्य होगा क्योंकि पृथ्वी हरा–भरा स्वर्गलोक, अदन की वाटिका के समान बन जाएगी। छोटे बच्चे सिंहों के साथ खेलेंगे और भेड़िया भेड़ के बच्चे के साथ रहा करेगा (यशायाह 11ः 6–9)। लोग चंगे हो जाएगे और स्वस्थ रहेंगे, सब शान्ति में निवास करेंगे और लोग आशीष पाकर फूले पफलेंगे और पृथ्वी को भर देंगे। जब एक **हज़ार** वर्ष पूरे हो जाएगे तब पाताल से शैतान को निकालकर खोल दिया जाएगा और वह बाहर आते ही देशों को छलेगा। बहुत से लोग शैतान के पीछे हो लेंगे और यीशु मसीह को हराने का प्रयत्न करेंगे। स्वर्ग से आग गिरकर उन्हें फाड़ खाएगी और शैतान को आग और गन्माक की जलती झील में डाल दिया जाएगा। तब अविश्वासियों **को** महान् श्वेत सिंहासन के सामने न्याय किया जाने के लिए इकट्ठा किया जाएगा और मृत्यु और अमाोलोक आग की झील में डाले जाएगे (प्रकाशितवाक्य 20)। पुराना आकाश और पुरानी पृथ्वी नष्ट कर दिए जाएगे (2 पतरस 3ः 7, 10–13)। (यशायाह 9ः6–7; 11ः1–16; 24ः23; 35ः1–10; 56ः1–8; 60ः 1–22; 61ः1–11; 62ः 1–12; 62ः1–12; 65ः17–25; 66ः 10–24;

यिर्मयाह 31: 27–40; यहेजकेल 34:11–31; 36:22–38; 37: 21–28; **अध्याय** 40–48; दानिव्येल 7:13–14; योएल 3:18–21; आमोस 9:11–15; मीका 4:1–8; हबक्कूक 2:14; जकर्याह 8:1–23; 9:10; भजन संहिता 2:6–9; 24:7–10, 33:5)।

नया आकाश और नयी पृथ्वी

महा श्वेत सिंहासन के न्याय के बाद, परमेश्वर नये आकाश और नयी पृथ्वी को प्रगट करेगा, जो पाप से दागी या दूषित न हों। (प्रकाशितवाक्य अमयाय 21–22; यूहन्ना 14:2–3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; 2 पतरस 3:13; इब्रानियों 12:22–23; प्रकाशितवाक्य 2: 7; 7: 7–17; 15: 2)। ''फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश, और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिए नृंगार किए हो। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को **ऊँचे** शब्द से यह कहते हुए सुना, देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी **आँखों से सब आंसू** पोंछ डालेगा और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी, पहली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:1–4)। ''फिर जिन स्वर्गदूतों के पास ... सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा, **इधर** आ, मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेमने की पत्नी **दिखाऊंगा** ... पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उनमें थी, और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की तरह स्वच्छ थी ... नगर की सड़क स्वच्छ **कांच** के समान **शुद्ध** सोने की थी। मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना उसका मन्दिर है। उस नगर में सूर्य और **चाँद** के उजियाले की **आवयकता** नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजियाला हो रहा है, और मेमना उसका दीपक है। जाति–जाति के लोग उसकी ज्योति में चलेंगे–फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने–अपने तेज का सामान उसमें लाएगे'' (प्रकाशितवाक्य 21: 9–26)।

''फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के **बीचों** बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था उसमें बारह प्रकार के पल लगते थे, और वह हर महीने पलता था और उस वृक्ष के **पत्तों** से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका **मुहं** देखेंगे और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे'' (प्रकाशितवाक्य 22:1–5)।

6. हम क्या विश्वास करते हैं

बाइबल

हम विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है और विश्वास और जीवन में अन्तिम अमिकार है। प्रत्येक शब्द (पवित्राशास्त्र) परमेश्वर द्वारा प्रेरणा प्राप्त, और मूल लेखों में बिना किसी गलती के **है|** (2 तीमुथियुस 3:16–17; 2पतरस 1:20–21; **मत्ती** 5:18; रोमियों 15: 4)|

परमेश्वर

हम एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं; **वह** सब कुछ का **सृष्टिकर्ता**, अनन्तकाल का अस्तित्व तीन व्यक्तियों में है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा (उत्पनि 1:1; भजन संहिता 8:1–9; 19:1–4; रोमियों 1: 20; 8: 31–39; 11: 33; 2 कुरिन्थियों 13:14; 1यूहन्ना 4: 7–8; **मत्ती** 28:19–20; यूहन्ना 1:1; 4: 24; याकूब 1:17; व्यवस्थाविवरण 6: 4–6; 1यूहन्ना 4:7–21; 1पतरस 1:13–16; भजन संहिता 139:1–14; यशायाह 45:5; प्रेरितों के काम 17:25)|

यीशु मसीह

हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, हमेशा से अस्तित्व में रहते हुए, उसने मनुष्य रूप **धारण** किया और कुमारी मरियम से इस पृथ्वी पर जन्म लिया। पृथ्वी पर उसने एक **सिद्ध**, पाप रहित जीवन जीया। **क्रूस** पर उसकी मृत्यु ने हमारे पापों के दण्ड का मूल्य चुकाया और केवल यही उन सभों के लिए **उद्धार** का **आधार** है जो उसमें विश्वास करते हैं। वह सशरीर **कब्र** में से जीवित हो उठा और अब सामर्थ्य में पिता के साथ राज्य कर रहा है – पिता के दाहिने हाथ–विराजमान है। वह हमें अनन्त जीवन, पापों की क्षमा और उसमें विश्वास के द्वारा शान्ति का आश्वासन देता है। परमेश्वर तक पहुचने या **उसके पास** जाने का वही एकमात्रा मार्ग है। हम पृथ्वी पर उसके दृष्टव्य और महिमामय लौटने की आशा लगाए हैं कि हम उसे अपना कहें और वह हमारा और सबका न्याय करे। (यूहन्ना 1:1–18, 29, 8: 58; 14: 6; लूका **अध्याय** 1–2; 2कुरिन्थियों 5: 20–21; 1पतरस 1: 3–9; इब्रानियों 1: 8; यशायाह 7:14; 9:6)।

पवित्रा आत्मा

हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है। वह विश्वासियों में वास करता है, मसीह को महिमान्वित करता, मार्गदर्शन करता, निर्देश देता और भक्ति पूर्ण जीवन जीने और सेवा करने के लिए हमें सामर्थ्य से भरता है और **अधिकार** देता है। (यूहन्ना 14: 26; 15: 26; 16:7–15; रोमियों 8: 5–18, 26–27; 1कुरिन्थियों 2:10; 12:12–14; इपिफसियों 1:13–14)।

मनुष्य

हम विश्वास करते हैं कि मनुष्य प्राणी परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए परन्तु पाप में गिर गए इसलिए आत्मिक मृतक और खोए (पापों में) जन्म लेते हैं। केवल यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास द्वारा और पवित्रा आत्मा के द्वारा नए बनाए जाने के द्वारा ही आत्मिक जीवन और **उद्धार** पाते हैं| (उत्पनि 1:26–31; 2:7–25; 3:1–24; रोमियों 3:23; 5:12; 6: 23)।

उद्धार

हम विश्वास करते हैं कि **उद्धार** परमेश्वर का **मुफ़्त** वरदान है जो कि पूर्ण रूप से हमारे कायो से अलग है। **कर्मों** से **उद्धार** नहीं मिलता। सब कोई प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने से, प्रभु यीशु को **हृदय** में ग्रहण करने से **उद्धार** पाते हैं। (इपिफसियों 1:13–14; 2: 8–10; यूहन्ना 1:12, 29; 3: 36; 5:24; 14: 6; 20:31; 1यूहन्ना 5:11–13; प्रेरितों के काम 16: 31; रोमियों 1:16; 5: 8; 10: 9–10; 2कुरिन्थियों 5:17; प्रेरितों के काम 4:12; तीतुस 3: 5–6)।

धर्म्विध्याँ (आज्ञाएँ)

हम विश्वास करते हैं कि प्रभु भोज (The Lord's Supper) मनाना और विश्वास का पानी में डुबकी का बपतिस्मा लेना चाहिए | (**मत्ती** 26:26–28; 1कुरिन्थियों 11: 23–26; मनी 28:19–20; प्रेरितों के काम 8:26–40)।

मृत्यु,न्याय का दण्ड, स्वर्ग, नरक

हम मृतकों के सशरीर पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं विश्वासी के लिए प्रभु के साथ अनन्त **धन्यता** और आनन्द; अविश्वासियों के लिए न्याय का होना और अनन्तकालीन सचेतावस्था का दण्ड (लूका 14:14; 23:42–43; यूहन्ना 5:28, 29; प्रकाशितवाक्य 20:10–15, अमयाय 21–22)।

7. बाइबल से सत्य

परमेश्वर समस्त सत्य का स्रोत और सत्व है। वह बाइबल में सत्य के लिए बोलने की बहुत सी बातें हैं।

- **भजन संहिता 25:5** ''मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा **उद्धार** करने वाला परमेश्वर है मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता **हूँ**।''
- **भजन संहिता 145:18** ''जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभी के वह निकट रहता है।''
- **नीतिवचन 12:19** ''सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है।''
- **यूहन्ना 14:6** ''यीशु ने उससे कहा, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही **हूँ |** बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुच सकता।''
- **यूहन्ना 8:31–32** ''तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्रा करेगा।''
- **यूहन्ना 14:15–17** ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। मैं पिता से विनती करूगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।''
- **यूहन्ना 16:13** ''परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।''
- **2 थिस्सलुनीकियों 2:10** ''क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिससे उनका उणर होता।''
- **3 यूहन्ना 1:4** ''मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि मैं सुनू, कि मेरे बच्चे सत्य पर चलते हैं।''

जीवन का अर्थ और प्रयोजन क्या है?

जीवन में कुछ सबसे महन्वपूर्ण और **दुर्बोध** प्रश्न हैं : मैं कौन **हूँ**? मैं **कहाँ** से आया? मरने के बाद मैं **कहाँ जाऊंगा**? मैं **यहाँ** क्यों **हूँ** और जीवन का अर्थ और प्रयोजन क्या है**?** बाइबल **में** न केवल इन सब प्रश्नों के, परन्तु अन्य बहुत–से प्रश्नों के उनर **भी** हैं।

- **व्यवस्थाविवरण 6:4–7** ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है तू अपने

परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाए जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे मार्ग पर चलते, लेटते उठते, इनकी चर्चा किया करना।''

- **कुलुस्सियों 3:17** ''वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का **धन्यवाद** करो।''
- **निर्गमन 20:3–4, 7–8, 12–17** ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, यह पृथ्वी के जल में है।... तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना... तू विश्राम दिन को पवित्रा मानने के लिए स्मरण रखना. .. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए... तू खून न करना। तू व्यभिचार न करना। तू चोरी न करना। तू किसी के **विरुध** झूठी साक्षी न देना। तू किसी के घर का लालच न करना... न किसी की किसी वस्तु का लालच करना'' (दस आज्ञाए)।
- **भजन संहिता 23:1–6** ''यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी न होगी। वह मुझे हरी–हरी चराइयों में बैठाता है वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है वह मेरे जी में जी ले आता है। **धार्मिकता** के मार्ग में वह अपने नाम के निमिन मेरी अगुआई करता है। चाहे मैं मृत्यु की घोर अन्माकार से भरी हुईतराई में होकर **चलूँ,** तौभी हानि से न **डरूंगा** क्योंकि तू मेरे साथ रहता है तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। तू मेरे सतानेवालें के सामने मेरे लिए **मेज़** बिछाता है तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ–साथ बनी रहेंगी और मैं यहोवा के **धाम** में सर्वदा वास करूगा।''
- **1 कुरिन्थियों 13:4–8** ''प्रेम **धीरज्वंत** है, और **क्रपालु** है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में **धीरज धर्ता** है। प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यद्वाणिया हों तो समाप्त हो जाएगी भाषाए हों तो जाती रहेंगी ज्ञान हो तो मिट जाएगा।''
- **यिर्मयाह 29:11** ''क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाए मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूगा।'' परमेश्वर आपसे चाहता है कि उसे जानें, उससे प्रेम करें और उत्सुकता से उसकी सेवा करें। परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक योजना है।
- **तीतुस 2:11–14** ''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के **उद्धार** का कारण है और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और **धार्मिकता** और भक्ति से जीवन बिताए और उस मान्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और **उद्धारकर्ता** यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिसने अपने आपको हमारे लिए दे दिया कि हमें सब प्रकार के **अधर्म** से छुड़ा ले, और **शुद्ध** करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले–भले कामों में सरगर्म हो।''
- **मत्ती** ''28:19–20 ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हू!।'' (महान् आदेश: यह यीशु ने स्वर्ग पर

उठाए जाने से पहले अपने–चेलों से जो बातें कही थीं, उनमें से अन्तिम आदेश है)।

- **मरकुस 12:28–31** ''शास्त्रियों में से एक ने उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने अच्छी रीति से **उत्तर** दिया, उससे पूछा, ''सबसे मुरव्य आज्ञा कौन सी है?'' यीशु ने उसे **उत्तर** दिया, ''सब आज्ञाओं में से यह मुख्य हैः 'हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है, और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी **बुद्धि** से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।' और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।'' (महान् आज्ञा)।
- **यूहन्ना 1:12** ''परन्तु **जितनों** ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का **अधिकार** दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।''
- **1पतरस 1:3–9** ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का **धन्यवाद** हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस **उद्धार** के लिए जो आनेवाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है। इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं **अधिक** बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे। उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर, और महिमा से भरा हुआ है और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का **उद्धार** प्राप्त करते हो।''
- **इफिसियों 1:3** ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का **धन्यवाद** हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है।''
- **2 पतरस 1:3** ''क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से **सम्बन्ध** रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌मुण के अनुसार बुलाया है।''
- **उत्पनि 1:26** ''फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाए, और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलु पशुओं और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, **अधिकार** रखें'।''
- **यूहन्ना 3:16–18** ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा **उद्धार** पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।''
- **लूका 24:43** ''यीशु ने उससे कहा, 'मैं तुझ से सच कहता **हूँ** कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'।'' (यदि प्रभु यीशु के साथ आपका व्याक्तिगत सम्बन्मा है, तब जब आप मरते हैं तो तुरन्त आप स्वर्ग को **जायगा**)|
- **नीतिवचन 3:5–6** ''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए **सीधा** मार्ग निकालेगा।''

- **मनी 6:25–34** ''इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएगे और क्या पीएगे और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो! वे न तो बोते हैं, न कातते हैं, और न **खत्तों** में बटोरते हैं फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे **अधिक** मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और **वस्त्रों** के लिए क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर मयान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। तौभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा? इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि 'हम क्या खाएगे', या 'क्या पीएगे,' या 'क्या पहिनेंगे'। क्योंकि अन्यजातीय इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी **धार्मिकता** की खोज करो तो ये सब **वस्तुं** भी तुम्हें मिल जाएगी। अतः कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुःख बहुत है।''
- **रोमियों 15:13** ''परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति में परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।''
- **फिलिप्पियों 2:3–4** ''**विरोध** या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।''
- **फिलिप्पियों 4:13** ''जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हू!।''
- **मत्ती 17:20** ''उसने उनसे कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे '**यहाँ** से सरक कर **वहां** चला जा,' तो वह चला जाएगा और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी'।''

मसीह की (यीशु की) पूर्ण हुई भविष्यद्वाणिया - प्रथम आगमन कीं

परमेश्वर का वचन मसीह **सम्बंधित** बहुत–सारी भविष्यद्वाणिया समाहित किए है। मसीह एक शिशु के रूप में आएगा और परमेश्वर का पुत्र होगा। ''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके **कन्धों** पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला **पराक्रमी** परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको **दाउद** की राजगपी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और **धार्मिकता** के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा'' (यशायाह 9: 6–7)।

मसीह का जन्म एक **कुवांरी** से होगा और उसका नाम इम्मानुएल (इसका अर्थ है, ''परमेश्वर हमारे साथ है''), रखा जाएगा। ''इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चि देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी'' (यशायाह 7:14)।

मसीह का जन्म बैतलहम में होगा और वह इस्राएल पर शासक बनेगा। ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के **हजारों** में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों

में प्रभुता करनेवाला होगा और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादिकाल से होता आया है'' (मीका 5:2)।

दुःख भोगने वाला मसीह परमेश्वर का मेमना था जिसका जीवन पाप के लिए एक बलिदान था।
"देखो, मेरा दास वृण् से काम करेगा, वह ।!चा, महान् और अति महान् हो जाएगा। जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए μ क्योंकि उसका रूप यहा! तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्रा करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी"। (यशायाह 52:13—15)|

यशायाह 53: 1—12

1 जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?
2 क्योंकि वह उसके सामने **अंकुर** के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में पफूट निकलेउसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते।
3 वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ थाऋ वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहचान थीऋ और लोग उससे मुख पफेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हमने उसका मूल्य न जाना।
4 निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा—कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।
5 परन्तु वह हमारे ही अपरामों के लिए घायल किया गया, वह हमारे अमार्म के कामों के कारण कुचला गया हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाए।
6 हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे हम में से हर एक ने अपना—अपना मार्ग लिया और यहोवा ने हम सभी के अमार्म का बोझ उसी पर लाद दिया।
7 वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना **मुहं** न खोला जिस प्रकार भेड़ **वध** होने के समय और भेड़ी **ऊन** कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना **मुहं** न खोला।
8 अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए उस समय के लोगों में से किसने इस पर **ध्यान** दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया। मेरे ही लोगों के अपरामों के कारण उस पर मार पड़ी।
9 उसकी क़ब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह **धनवान** का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके **मुहं** से कभी छल की बात न निकली थी।
10 तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले, उसी ने उसको रोगी कर दिया जब वह अपना प्राण दोष बलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा वह बहुत दिन जीवित रहेगा उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।
11 वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा अपने ज्ञान के द्वारा मेरा **धर्मी** दास बहुतेरों को **धर्मी** ठहराएगा और उनके **अधर्म** के कामों का बोझ आप उठा लेगा।

12 इसलिए मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूगा, और वह सामर्थियों के संग लूट **बाँट** लेगा क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया, वह **अपराधियों** के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और **अपराधियों** के लिए विनती करता है।

मसीह सम्बंदित जो **भविष्यद्वाणिया** पूरी हुईं (पाक्षिक सूची)

भविष्यद्वाणी (पुराने नियम की भविष्यद्वाणी जो नया नियम में पूरी हुईं)

- अब्राहम का वंश (सन्तान) (उत्पनि 12:2–3...; **मत्ती** 1:1; गलातियों 3:16)
- यहूदा का वंश (सन्तान) (उत्पनि 49:10... **मत्ती** 1:2)
- दा।द का वंश (सन्तान) (2शमूएल 7:12–16; यिर्मयाह 23:5...; **मत्ती** 1:1)
- कुमारी से जन्म (यशायाह 7:14; उत्पनि 3:15...; **मत्ती** 1:18, 23)
- बैतलहम में जन्मा (मीका 5: 2...; **मत्ती** 2:1–12)
- वह अनन्त है (मीका 5: 2; यशायाह 9:6; 53: 10–11; भजन संहिता 110:1...; यूहन्ना 1:1, 14; 5:58; इब्रानियों 1:8)
- वह परमेश्वर का पुत्र है (यिर्मयाह 23: 6; यशायाह 9:6–7...; यूहन्ना 20:31)
- उसका मिशन (यशायाह 61:1...; लूका 4: 16–21)
- एक सन्देशवाहक उसका मार्ग तैयार करता है(यशायाह 40: 3; मलाकी 3: 1; 4: 5–6...; **मत्ती** 3: 1–3; 11: 7–11)
- दीन और गदहे पर सवारी करता है (जकर्याह 9:9...; **मत्ती** 21:5)
- शान्ति का पुरुष (यशायाह 53:9...; यूहन्ना 14:27)
- **बुध्धि**, ज्ञान और सत्य का मनुष्य (यशायाह 52: 13; 53: 9, 11...; यूहन्ना 14:6;
- **धर्मी** मनुष्य (यशायाह 53:11...; लूका 23:47)
- अति महान् (यशायाह 52:13, 15; 53:12...; पिफलिप्पियों 2:9–11)
- बहुमूल्य कोने का पत्थर (यशायाह 28:16...; 1पतरस 2:6)
- नई वाचा का **मध्यस्थ** (यिर्मयाह 31: 31–34; यशायाह 42: 6–7; 53:12...; इब्रानियों 12:24)
- नई वाचा का सन्देशवाहक (मलाकी 3:1...; **मत्ती** 26: 28)
- राजा (गिनती 24:17; यिर्मयाह 23:5; भजन संहिता 2:6...; **मत्ती** 21:5)
- भविष्यद्वक्ता (व्यवस्थाविवरण 18:15–19...; प्रेरितों के काम 3: 22)
- याजक (भजन संहिता 110:4...; इब्रानियों 5:5–10)
- वह **तिरिस्कृत** किया गया (भजन संहिता 118:22; यशायाह 53:3...; **मत्ती** 21:42 वह तुच्छ जाना गया)
- उसने दु:ख भोगा (यशायाह 53:3–4, 5, 7, 11...; लूका 18:31–33)
- उसका दु:ख भोगना शान्ति और चंगाई लाया (यशायाह 53:5...; प्रेरितों के काम 10:36; 1पतरस 2:24)
- उसका शरीर छेदा, भेदा गया (जकर्याह 12:10; यशायाह 53:5...; यूहन्ना 19: 34; 20:25, 27)
- कोई हडड्ी नहीं तोड़ी गई (भजन संहिता 34: 20; गिनती 9:12; निर्गमन 12:46...; यूहन्ना 19:33–36)
- उसके वस्त्राों पर चिट्ठी डाली गई, जूआ खेला गया (भजन संहिता 22:18...; **मत्ती** 27:35)

- उसका रूप **विकृत** था (कुरूप) (यशायाह 52:14...; यूहन्ना 19:1–3, 18)
- उसको कोड़े मारे गए (यशायाह 53:5...; यूहन्ना 19:1)
- परमेश्वर का मेमना (यशायाह 53:7...; यूहन्ना 1:29)
- उसका जीवन पाप के लिए एक चढ़ावा है (यशायाह 53:10...; 2कुरिन्थियों 5:21; रोमियों 8:3–4)
- संसार के पापों को उठा ले गया (यशायाह 53:4–6, 8, 11–12...; इब्रानियों 9:28; 1 पतरस 2:24)
- उसकी मृत्यु (यशायाह 53: 8–9, 12; दानिय्येल 9: 25–27; जकर्याह 13:7...; यूहन्ना 19:18)
- उसका पुनरुत्थान (भजन संहिता 16:10... **मत्ती** 28: 6; प्रेरितों के काम 2:22–36; 13:32–37;
- उसका स्वर्गारोहण (स्वर्ग पर उठा लिया जाना) (भजन संहिता 68:18...; प्रेरितों के काम 1:9–11; इफिसियों 4:8)
- यीशु मसीह, **"राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु"** अपने लोगों को छुड़ाने महाक्लेश के अन्त पर पृथ्वी पर उतरेगा कि दुष्टों का न्याय **करेगा** और अपने पृथ्वी के राज्य पर शासन **करेगा**। (प्रकाशितवाक्य, **अध्याय** 19–20; यशायाह 34:1–17; 66:15–17; दानिय्येल 12:1–13; योएल 2:28–32; 3:1–17; जकर्याह, **अध्याय** 12–14; **मत्ती** 25: 31–46; लूका 17: 20–37; 2थिस्सलुनीकियों 1:1–12; 2:1–12;

स्वर्गदूत

स्वर्गदूत आत्मिक प्राणी हैं। परमेश्वर ने उन्हें उसकी सेवा करने के लिए सिरजा है। "क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माए नहीं, जो **उद्धार** पानेवालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं" (इब्रानियों 1:14)। स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों को विशेष सन्देश बताते हैं (उत्पनि 22:11; न्यायियों 13:3–5; जकर्याह 2:1–6; लूका 1:11–20, 26–38; मनी 28:1–7)। वे अत्यन्त **बुध्धिमान**, **अत्यधिक** सामर्थ्यशाली और अक्सर विश्वासियों की सुरक्षा और सहायता करते हैं (उत्पनि 19:15–17; 48:16; निर्गमन 23:20–23; 2 शमूएल 14: 20; 1राजाओं 19: 5–7; प्रेरितों के काम 5:19; 12:7–11)। ईश्वरीय न्याय के दण्ड को कार्यान्वित करने हेतु स्वर्गदूत परमेश्वर की सेवा करते हैं| (उत्पनि 19:12–13; 2शमूएल 24:15–17; 2इतिहास 32:.)। अन्त के समयों में बहुत सारे न्याय के दण्डों को देने के लिए स्वर्गदूत उपकरण का काम करेंगे (**मत्ती** 13: 40–42, 49–50; 2 थिस्सलुनीकियों 1: 6–8; प्रकाशितवाक्य 6:1–17; 8:1–13; 9:1–21; 11:15–19; 15:1–16:21)। अक्सर स्वर्गदूतों को प्रभु को आदर, और महिमा देने और उसकी स्तुति करने के रूप में दिखाया जाता है (भजन संहिता 103: 20–21; प्रकाशितवाक्य 5:11–12)। "जब मैंने देखा, तो सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी, और वे **ऊँचे** शब्द से कहते थे, "**वध** किया हुआ मेमना ही सामर्थ्य और मान और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और मान्यवाद के योग्य है!" (प्रकाशितवाक्य 5:11–12)।

- **मत्ती 18:10** "देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना क्योंकि मैं तुमसे कहता **हूँ** कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का **मुह** सदा देखते हैं।"
- **निर्गमन 23:20** "सुन, मैं एक स्वर्गदूत तेरे आगे–आगे भेजता **हूँ** जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैंने तैयार किया है उसमें तुझे **पहुंचाएगा**।"

- **2 शमूएल 24:16** ''परन्तु जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा यह **विपत्ति** डालकर शक्ति हुआ, और प्रजा का नाश करनेवाले स्वर्गदूत से कहा, ''बस कर अब अपना हाथ खींच।'' यहोवा का स्वर्गदूत उस समय अरौना नामक एक यबूसी के खलिहान के पास था।''
- **2 राजाओं 19:35** ''उसी रात में क्या हुआ कि यहोवा के स्वर्गदूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी **हज़ार** पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग उठे, तब देखा, कि शव ही शव पड़े हैं।''
- **लूका 2:8–15** ''और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। और प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका और वे बहुत डर गए। तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, ''मत डरो क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता **हूँ** जो सब लोगों के लिए होगा, कि आज **दाउद** के नगर में तुम्हारे लिए एक **उद्धारकर्ता** जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। और इसका तुम्हारे लिए यह पता है कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा पाओगे।'' तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो!'' जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, ''आओ, हम बैतलहम को जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।'' तीतुस 2:11–14)

शैतान (नरकदूत, लूसीपफरद्ध) और दुष्ट आत्माए

पुराना नियम और नया नियम शैतान के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से दिखाते हैं। सबसे पहले शैतान **उत्पत्ति** 3 में एक सांप के रूप में प्रगट होता है। **नए** नियम में उसकी उपस्थिति **अधिक** विशिष्टता से है। शैतान स्वर्ग से गिराया गया एक स्वर्गदूत है (यहेजकेल 28; यशायाह 14)। उसके पाप (घमण्ड के कारण) **के कारण** उसे परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया था (यहेजकेल 28:16)। दुष्ट आत्माए निचले दर्जे के गिराए गए स्वर्गदूत हैं और ये सब शैतान के **अधिकार** में हैं। शैतान और उसकी दुष्ट आत्माए (स्त्री लिंग–पुल्लिंग दोनों ही) आत्मिक प्राणी हैं, ये **बुध्धिमान** हैं, शक्तिशाली हैं, रोग–बीमारी ला सकते हैं, मन को प्रभावित करते हैं, लोगों को **धोखा देते**, **यहाँ** तक कि जाति–जाति को **धोखा** देते हैं। (**मत्ती** 8:16; 12: 24; 25: 41; प्रकाशितवाक्य 12:7; 16:14; लूका 10:17, 20; 13:11, 16; मरकुस 1:24; 5:3–4; 1तीमुथियुस 4:1; उत्पनि 3:1–5; 1थिस्सलुनीकियों 3:5)।

- **याकूब 4:7** ''इसलिए परमेश्वर के अमीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।''
- **1 पतरस 5:8–9** ''सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हारा **विरोधी** शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं।''
- **2 कुरिन्थियों 11:14** ''यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप **धारण** करता है।''
- **प्रकाशितवाक्य 20:10** ''उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्माक की झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।''

8. बाइबल की बुनियादी बातें

बाइबल का परिचय

बाइबल परमेश्वर का वचन है और विश्वास और जीवन में अन्तिम **अधिकार** है। प्रत्येक शब्द परमेश्वर **की** से प्रेरणा प्राप्त (प्रेरित किया) है और मूल लेखों में बिना किसी ग़लती के है। (2तीमुथियुस 3:16–17; 2पतरस 1:20–21; मनी 5:18; रोमियों 15:4)।

''सम्पूर्ण पवित्राशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुमाारने, और **धार्मिकता** की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन **सिद्ध** बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।'' (2 तीमुथियुस 3:16–17)।

बाइबल अद्वितीय है। यह विभिन्न सामाजिक स्थिति के चालीस से **अधिक** लेखकों द्वारा लिखी गई थी। इसे 1500 वषो के लगभग समय में लिखा गया। बाइबल की कुल छियासठ पुस्तकों के लिखने में तीन भाषाओं (इब्रानी, अरामायक और यूनानी) का प्रयोग हुआ जिसे तीन विभिन्न महाद्वीपों (एशिया, अप्रफीका और यूरोप) में लिखा गया था। बाइबल प्रकाशित (प्रगट) करती है कि परमेश्वर कौन है, हम कैसे **उद्धार** पा सकते हैं और हम अपने विचारों, शब्दों (वचनों) और **कार्यों** में परमेश्वर को कैसे महिमान्वित कर सकते हैं। इसे पुराना नियम और नया नियम में विभाजित किया गया है।

पुराना नियम उन्तालीस पुस्तकों से मिलकर बना है जिसमें विश्व–ब्रम्हाण्ड की सृष्टि, मनुष्य का बनाया जाना, मनुष्य का पतन (पाप में गिरना), जल प्रलय, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का जीवन वृनान्त, मिस्र की गुलामी से परमेश्वर की प्रजा का छुटकारा, इस्राएल जाति का उद्‌भव या जन्म, सीनै पर्वत पर व्यवस्था का दिया जाना, कनान पर विजय पाना (प्रतिज्ञात देश), न्यायियों की **अवधि**, सबसे पहला राजा **शाऊल** फिर **दाऊद** और उसके बाद सुलैमान राजाओं से राजाओं का आरम्भ, पहला मन्दिर (सुलैमान का), इस्राएल का **उत्तरी** राज्य (इस्राएल) और दक्षिणी राज्य (यहूदा) में विभाजन अश्शूरियों द्वारा इस्राएल को **बंधुआई** (निर्वासन, दासता) में ले जाना, मन्दिर का विनाश और बेबीलोनियों द्वारा यहूदा को **बंधुआई** (निर्वासन) में ले जाना, यहूदा का यरूशलेम वापस लौटना और दूसरे मन्दिर (जरुब्बाबेल के) का अर्पण किया जाना। **अधिकांश** पुराना नियम इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर के कार्य व्यवहार जो सीनै पर्वत पर **बाँधी** गई वाचा के **आधार** पर थे – उन पर लक्ष्य करता है। सम्पूर्ण पुराना नियम में छुटकारा देने वाले – **उद्धारकर्ता** मसीह के आगमन और नयी वाचा की संस्थापना से **क्रमवार** बहुत सारी भविष्यद्वाणिया हैं। इन भविष्यद्वाणियों का पूरा होना नया नियम की कहानी है। पुराना नियम के भविष्यद्वक्ता मलाकी और मसीह (यीशु) के जन्म के बीच में 400 वषो का अन्तराल है।

नया नियम में **सत्ताईस** पुस्तकें संकलित हैं जो लगभग ईस्वी सन् 35 से ईस्वी सन् 95 तक लिखी गई थीं। नया नियम मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मनुष्यों के नये **सम्बन्ध** जो कि नयी वाचा पर **आधारित** है का वर्णन करता है (यिर्मयाह 31:31–34; लूका 22:14–20; 2कुरिन्थियों 3:6–11)। पुरानी वाचा आनेवाले **उद्धारकर्ता** (छुटकारा देनेवाले) के आगमन की व्यवस्था और प्रतिज्ञात मसीह में परमेश्वर की पवित्रता को प्रगट करती है। नई वाचा परमेश्वर के **धर्मी** पुत्र (यीशु) में परमेश्वर की पवित्रता को दिखाती है। तब नया नियम उन लेखनों को समाहित करता है जो नयी वाचा की विषय सूची को प्रगट करते हैं। नया नियम का सन्देश मसीह

के चारों ओर केन्द्रित है, जिसने अपना जीवन पापों का मूल्य चुकाने के निमिन एक चढ़ावे के रूप में दे दिया (यशायाह 53:10; **मत्ती** 26:28; और लोगों (कलीसिया) के लिए जिन्होंने **उद्धार** प्राप्त किया। इस प्रकार नया नियम का केन्द्रीय विषय **उद्धार** है। सुसमाचार (चार सुसमाचार–पुस्तकें) **उद्धारकर्ता** (यीशु) का परिचय कराती हैं। प्रेरितों के काम नामक पुस्तक **उद्धार** के बारे में शुभ सन्देश को फैलाने के विषय में बताती है। शेष नया नियम उस **उद्धार** की आशीषों का विस्तार से वर्णन करता है।

बाइबल के नया नियम की पुस्तकें

पुस्तक का नाम, विषय, उपयोगी **अध्याय**, एवं पद

चार सुसमाचार और प्रेरितों के काम मसीह का जीवन, कलीसिया का जन्म, मसीहियों का सताव, मसीहियत का पफैलना अमयाय एवं पद सन्दर्भ :–

- **मत्ती -** यीशु राजा है– जन्म 1–2, बपतिस्मा 3, पहाड़ी उपदेश 5–7, प्रार्थना 6: 5–13, चिन्ता 6: 25–34, अन्त समय - 24–25,**क्रूस** पर चढ़ाया जाना - 27:27–66, पुनरुत्थान - 28:1–10, महान् आदेश - 28:19–20.
- **मरकुस -** यीशु दास का स्वरूप - 10:45; अन्त समय 13, **क्रूस** पर चढ़ाया जाना - 15:21–47, पुनरुत्थान 16:1–8.
- **लूका -** यीशु मनुष्य का पुत्र - 19:10, 24:46–48; जन्म 1–2; बपतिस्मा 3:1–22; बिलाशर्त प्रेम 6:27–38; अन्त समय 17:20–37; 21:5–36; **क्रूस** पर चढ़ाया जाना 23:26–56; पुनरुत्थान 24:1–12.
- **यूहन्ना -** यीशु परमेश्वर का पुत्र 20:31; आरम्भ में 1:1–18; बपतिस्मा 1:19–34; **क्रूस** पर चढ़ाया जाना 19:17–42; पुनरुत्थान 20:1–18.
- **प्रेरितों के काम -** जन्म, उन्नति और कलीसिया पर सताव 1:1–11, कलीसिया का जन्म 2; सताव का आरम्भ 4; **स्तिफानुस** प्रथम विश्वासी मार डाला गया 6: 8–8: 3; पौलुस का जीवन परिवर्तन 9:1–31; अन्य जातियों के जीवन परिवर्तन 9: 32–10: 48; पौलुस की गिरल्तारी 21:27–22:29:

प्रेरित पौलुस के द्वारा पुस्तकें

- **रोमियों -** विश्वास द्वारा **उद्धार** परमेश्वर का प्रकोप 1:16–32; माार्मिकता 3:21–31; 5:1–21 निरन्तर पाप करना? 6; परमेश्वर की भलाई 8: 26–39; विश्वास द्वारा **उद्धार** 10: 1–17; अपने मन को नया करों 12:1–8.
- **1 कुरिन्थियों** - **सुधर/संशोधन** 6:19–20; विवाह 7; परीक्षा 10:12–13, 31; आत्मिक वरदान 12:1–14: 40; प्रेम परिभाषित किया 10:1–13; सुसमाचार परिभाषित किया 15:1–5; बादलों पर उठाया जाना 15: 51–58; देने के बारे में 16: 2.
- **2 कुरिन्थियों -** मसीही सेवा 4:16–18; 13:5, 14; पुनरुत्थान का आश्वासन 5:1–9; मसीह का न्याय आसन 5:10–13; मसीह का प्रेम 5:14–21, देने के बारे में 8:1–9:15; पौलुस का दर्शन 12:1–10.
- **गलातियों** - व्यवस्था से स्वतन्त्रता विश्वास द्वारा **उद्धार** 2:16–4:31; स्वतन्त्रता 5:1–15; आत्मा के फल 5:16–26; पाप करनेवाला भाई 6:1–5.

- **इफिसियों** - मसीह की देह का निर्माण करना चुने गए और छाप लगाई गई 1:3–23; अनुग्रह द्वारा **उद्धार** हुआ 2:1–10; मसीह की देह 2:11–4:6; पवित्र आत्मा के वरदान 4:7–16; विश्वासियों का व्यवहार 4:17–6:9; विवाह और परिवार 5:22–6:4; प्रभु में बलवन्त बनो 6:10–20.
- **फिलिप्पियों** - जीवित रहना मसीह है 1: 6, 21; 3: 8; दीनता 2:1–18; चिन्ता 4: 6–8; परिस्थितियों के साथ शान्ति में रहना 4:10–23.
- **कुलुस्सियों** - मसीह की श्रेष्ठता और कार्य मसीह का चरित्र 1:15–23; पौलुस को मसीह का आदेश 1:24–29; उन्नत की गई मसीहियत 2; उन्नत की गई बुलाहट 3:1–4: 6; पारिवारिक जीवन 3:18–21.
- **1 थिस्सलुनीकियों** - जबकि मसीह के आने की बाट जोट रहे हैं तब पवित्रता का जीवन जीना प्रभु में बढ़ना 3: 9–13; बादलों पर उठा लिया जाना और अन्त समय 4:13–5:11; आनन्दित रहो, प्रार्थना करो, **धन्यवाद** दो, 5:16–18.
- **2 थिस्सलुनीकियों** - जबकि मसीह के दूसरे आगमन की बाट जोह रहे हैं तो अटल बने रहना अन्त समय का न्याय और चैन 1:3–12; पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र – **धर्म** का त्याग 2:1–13; स्थिर बने रहो 2:13–17.
- **1 तीमुथियुस** - अगुआई की नियमावली एवं कलीसिया में व्यवहार 1:5–6; **आराधना** पर निर्देश 2:1–15; कलीसिया में **अध्यक्षों** और डीकनों की योग्यताए 3:1–16; विमावाए और प्राचीन 5:1–25; रुपया, भक्ति, भलाई 6:6–9.
- **2 तीमुथियुस** - सेवकाई में संयम, सहनशीलता 1:7, 3:16–17; साहस और विश्वासयोग्यता 1:8–18; मसीह का सिपाही 2:1–26; अन्तिम दिन 3:1–9; सताव 3:10–15; **धार्मिकता** का मुकुट 4:6–8.
- **तीतुस** - स्वभाव नियमावली कलीसिया में प्राचीन 1:5–9; अनुग्रह 2:11–15; अनुग्रह के द्वारा **उद्धार** पाया 3:5–7.
- **फिलेमोन** - क्षमा उनेसिमुस के लिए पौलुस की विनती 1:8–21.

पतरस, यूहन्ना, याकूब और अन्यों की पुस्तकें :

- **इब्रानियों** - मसीह की श्रेष्ठता 4:12; 12:1–2; मलिकिसिदक–परमेश्वर का याजक और नयी वाचा 7:1–8:13; पहली वाचा और नयी वाचा 9:1–10:31; विश्वास परिभाषित किया 11.
- **याकूब** - विश्वास जो कार्य करता है जाच और परीक्षाए 1:2–18; सुनना और करना 1:19–27; विश्वास और कार्य 2:14–26; जीभ को वश में लाना 3:1–12; सच्ची **बुधी** 3:13–18; सांसारिकता 4.
- **1 पतरस** - मसीह का दुःख भोगना एक जीवित आशा 1: 3–12; पवित्र बनो 1:13–25; विवाह 3:1–7; दुःख उठाना 3:13–4:19; दीनता और चिन्ता 5:5–7.
- **2 पतरस** - झूठे शिक्षकों के विरोमा में एक की बुलाहट और चुना जाना 1:3–11; पवित्रशास्त्र की भविष्यद्वाणी 1:12–21; झूठे शिक्षक 2; अन्त के समय 3.
- **1 यूहन्ना** - सहभागिता सहभागिता के अभिलक्षण या विशेषताए 2: 28–3: 24, सहभागिता के लिए चेतावनी 4; सहभागिता के परिणाम 5.
- **2 यूहन्ना** - झूठे शिक्षकों से दूर रहो एक दूसरे से प्रेम करो 1:5–6; झूठे शिक्षक 1:7–11.
- **3 यूहन्ना** - परमेश्वर के सन्तानों के साथ संगति गयुस का प्रभाव 1:2–8.

- **यहूदा -** विश्वास के लिए संघर्ष पाप और अभक्त लोगों का न्याय 1: 3–16; दृढ़ बने रहने का **आह्वान** 1:17–23.
- **प्रकाशितवाक्य -** यीशु मसीह का प्रकाशन सात कलीसियाओं को सन्देश 2:1–3:22; छाप, न्याय के दण्ड 6; 144000 यहूदी 7:1–8; 14:1–5, तुरहियों के न्याय के दण्ड 8:1–9:21; 11:15–19; दो गवाह (भविष्यद्वक्ता) 11; पृथ्वी और स्वर्ग में **युद्ध** 12; पशु और झूठा नबी 13; कटोरों के न्याय के दण्ड 15–16; महान् बेबीलोन 17–18; मसीह का पृथ्वी पर लौटना 19; सहस्राब्दि 20; नया आकाश, नयी पृथ्वी, नया यरूशलेम 21:1–22:5; उपसंहार 22:6–21.

बाइबल के पुराना नियम की पुस्तकें

पुस्तक का नाम विषय **अद्धायाय** एवं सहायक पद

पंचग्रन्थ मूसा की पाच पुस्तकें (व्यवस्था या तोरह)

- **उत्पनि** - आरम्भ - सृष्टि का आरम्भ 1–2; पतन 3:1–24; नूह और जल प्रलय 6–9; बाबेल की मीनार 11:1–9; इब्राहीम का इतिहास 11:27–25:11; अब्राम की बुलाहट 12:1–9; अब्राम के साथ यहोवा की वाचा 15:1–21; इसहाक का इतिहास 21–25; याकूब और एसाव 25:19–36: 43; याकूब के बारह पुत्रा 29–50 यूसुफ का इतिहास 37–50.
- **निर्गमन -** मिस्र की गुलामी से छुटकारा - इस्राएल मिस्र मेंः दासता 1:1–12: 36; तैयारी और मूसा की बुलाहट 2–4; परमेश्वर मूसा को फ़िरौन के पास भेजता है 5:1–7:13; विपनिया! 7:14–12:36; पहला फसह 12:1–36; मिस्र से निकलना 12:37–51; सीनै की ओर इस्राएल की यात्रा 12:37–18::27; व्यवस्था का दिया जाना 19–24; तम्बू 25–31, 35–40; व्यवस्था को तोड़ना 32–34.
- **लैव्यव्यवस्था** पवित्रता - बलिदान 1–17; पवित्रीकरण 18–27.
- **गिनती** - भटकना - इस्राएली शिकायत करते हैं 11–12; कनान को भेदिए भेजना 13; इस्राएल विद्रोह करता है 14; परमेश्वर से अनुशासित किया जाना 15–20.
- **व्यवस्थाविवरण** - वाचा - दस आज्ञाए 5: 6–21; आज्ञाओं को हमेशा स्मरण रखना 6: 4–9; आशीष और शाप की प्रतिज्ञाए 28; पलिश्तियों की वाचा 29–30; मूसा की मृत्यु 34.

इतिहास की पुस्तकें - बारह पुस्तकेंः

- **यहोशू** - विजय और विभाजन - 1:8–9; कनान देश में प्रवेश करना 1–5; कनान देश को जीतना 6–12; कनान देश की भूमि का बटवारा करना 13–24.
- **न्यायियों - घटनाचक्र -** दबोरा और बाराक 4–5; गिदोन का छुटकारा 6–8; यिप्तह 10:6–12:7; शिमशोन 13–16.
- **रूत** कुटुम्बी–छुड़ानेवाला - रूत का समर्पण 1:16–17; बोअज़ निकट **सम्बन्धी** के रूप में छुड़ानेवाला 2–4.

- **1 शमूएल -** शमूएल, **शाउल**, **दाउद**, शमूएल, अन्तिम न्यायी 1–8, **शाउल** इस्राएल का पहला राजा 9–31; **दाउद** चुना गया 16; गोलियत को हराता है 17; **शाउल** के स्थान पर **दाउद** का **ऊँचा** उठना 17–31.
- **2 शमूएल** - **दाउद** - **दाउद** इस्राएल के **ऊपर** राजा बनता है 5; **दाउद** का पाप 11; अबशालोम का विद्रोह 14–18.
- **1 राजाओं -** राज्य का विभाजन - सुलैमान इस्राएल का राजा बनता है 1:1–3:1; सुलैमान की **बुद्धि, प्रबन्ध** कार्य और **प्रसिद्धि** 3:2–4:34; 9:1–9; सुलैमान का मन्दिर 5–8; सुलैमान का पतन 11; विभाजित राज्य (इस्राएल और यहूदा) 12–22; एलिय्याह 17–19, 21.
- **2 राजाओं -** इस्राएल और यहूदा का पतन और बन्मुआई में जाना - विभाजित राज्य 1–17 एलीशा 2–9; अश्शूर इस्राएल को **बन्धुआइ** में ले जाता है 17; हिजकिय्याह का राज्य 18–20; बेबीलोन यहूदा को हराता है (निर्वासन में ले जाता है) और मन्दिर का नाश करता है 24–25.
- **1 इतिहास - दाउद** का राज्य - **दाउद** का अभिषेक और राज्य करना 10–29; सुलैमान राजा बनता है और राजा की मृत्यु 29:22–30.
- **2 इतिहास** - यहूदा का याजकीय दृष्टिकोण 7: 14; 16: 9; सुलैमान का राज्य करना 1–9; **बुद्धी पाने** के लिए सुलैमान की प्रार्थना 1: 7–12 सुलैमान के मन्दिर का अर्पण 5–7; यहूदा के राजा 10–36.
- **एज्रा -** मन्दिर - जरुब्बाबेल के अमीन यहूदा का निर्वासन से लौटना 1–6; मन्दिर का (दूसरा) निर्माण 3–6; एज्रा के **आधीन** निर्वासन से लौटना 7–10.
- **नहेम्याह** - यरूशलेम की शहरपनाह है - नहेम्याह के **आधीन** दीवारों का निर्माण किया जाना 1–7; एज्रा के **आधीन** वाचा को नया करना 8–10.
- **एस्तेर** - प्रावमाान–छुटकारे का 4:14; एस्तेर की खोज 2:1–20; मोर्दकै की भक्ति 2:21–23; हामान को दण्ड 3; परमेश्वर के लोग छुड़ाए गए 6–10.

काव्य की पुस्तकें - पांच पुस्तकें

- **अव्यूब** - प्रभुसना - अव्यूब पर घोर **विपत्तियाँ** 1–2; अव्यूब का वाद–विवाद 3–37; अव्यूब का छुटकारा 38–42.
- **भजन संहिता - आराधना -** मुख्य अमयाय 1, 22, 23, 24, 37, 72, 100, 119, 121 और 150.
- **नीतिवचन** - **बुद्धि** 2: 6; 3: 5–6; 8:13; 9:10; 15:1; 17:22; 22:6; 23:7; 27:17; नीतिवचनों का अभिप्राय 1:1–7; जवानों के लिए नीतिवचन 1:8–9:18; सुलैमान के नीतिवचन 10–29; भले चरित्रा वाली पत्नी 31:10–31.
- **सभोपदेशक -** व्यर्थ - सब कुछ व्यर्थ है 1:1–3; जीवन का आनन्द उठाना यह परमेश्वर की ओर से वरदान है 3:12–13; 3:22; 5:18–19; 8:15; 9:7–9; परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना 12:13–14.
- **श्रेष्ठगीत** - प्रेम - प्रणय–निवेदन 1–3; सुलैमान अपनी दुल्हिन की प्रशंसा करता है 4:1–15; प्रेम को विस्तार देना 5: 2–8:14.

भविष्यद्वाणी की पुस्तकें - सत्रह पुस्तकें

- **यशायाह - उद्धार** फटकारने और दण्डाज्ञा की भविष्यद्वाणि**यां** 1–39; मसीह का दुःख भोग और विजय पाना 52:13–53:12; सान्त्वना और शान्ति की भविष्यद्वाणि**यां** 40–66.
- **यिर्मयाह** - यहूदा की अन्तिम घड़ी - यिर्मयाह का **आहवान** 1; नयी वाचा 31:31–34; यहूदा के लिए भविष्यद्वाणि**यां** 2–45; अन्यजातियों के लिए भविष्यद्वाणि**यां** 46–51; यरूशलेम का पतन 52.
- **विलापगीत** - विलाप के गीत - यरूशलेम का विनाश 1; परमेश्वर का **क्रोध** 2; दया के लिए प्रार्थना 3; यरूशलेम की घेराबन्दी 4; प्रार्थना, **पुनरुद्धार**, दया के लिए प्रार्थना 5.
- **यहेजकेल -** इस्राएल का **पुनरुद्धार** - यहेजकेल को विशेष आदेश 1–3; यहूदा पर न्याय का दण्ड 4–24; अन्यजातियों पर न्याय का दण्ड 25–32; इस्राएल का **पुनरुद्धार** 33–48.
- **दानिय्येल -** इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना - दानिय्येल का इतिहास 1; **धधकती** आग का **भट्ठा** 3; सिंहों की मान्द 6; अन्यजातियों के लिए भविष्यद्वाणीय योजना 2–7; 70 सप्ताह की भविष्यद्वाणी 9; इस्राएल के लिए भविष्यद्वाणीय योजना 8–12.
- **होशे -** इस्राएल के प्रति परमेश्वर का निष्ठावान प्रेम - व्यभिचारिणी पत्नी और विश्वासयोग्य पति 1–3; व्यभिचारिणी इस्राएल और विश्वासयोग्य प्रभु (यहोवा) 4–14.
- **योएल -** प्रभु का दिन - उजाड़ 1:2–2:17; छुटकारा 2:18–3:21.
- **आमोस -** इस्राएल का न्याय - आमोस की भविष्यद्वाणि**यां** 1:3–2:16; आमोस के उपदेश 3–6; आमोस के दर्शन 7–9.
- **ओबद्याह -** एदोम पर न्याय का दण्ड - एदोम का न्याय 1:1–18; इस्राएल का **पुनरुद्धार** 1:19–21 (पुनःस्थापना)।
- **योना -** नीनवे में आत्मजागृति - योना को पहला आदेश 1–2; महामच्छ योना को निगल जाता है 1:17; योना को दूसरा आदेश 3–4.
- **मीका -** यहूदा को न्याय का दण्ड और पुर्नस्थापना 6: 8; न्याय के दण्ड की भविष्यद्वाणी 1–3; **पुनरुद्धार** की भविष्यद्वाणी 4–5; पश्चा**ता**प करने की याचना 6–7.
- **नहूम -** नीनवे पर न्याय का दण्ड - नीनवे का न्याय करने की आज्ञा दी गई 1; नीनवे का विनाश वर्णित 2; नीनवे को दण्ड मिलना ही था 3.
- **हबक्कूक -** विश्वास - हबक्कूक की समस्यायें 1–2; हबक्कूक की स्तुति 3 (प्रार्थना)।
- **सपन्याह -** प्रभु के दिन में न्याय का दण्ड और **पुनरुद्धार -** न्याय के दण्ड की भविष्यद्वाणि**यां** 1:2–3:8; आशीष की भविष्यद्वाणि**यां** 3:9–20.
- **हाग्गै -** मन्दिर का पुनर्निर्माण - मन्दिर के निर्माण (दूसरा) के लिए **आहवान** 1; बाद के मन्दिर की महिमा (तेज) 2:1–9; आज्ञाकारिता की वर्तमान आशीषें 2:10–19; प्रतिज्ञा की भविष्य की आशीषें 2:20–23.
- **जकर्याह -** मसीह के लिए तैयारी - पश्चा**ता**प करने का **आहवान** 1:1–6; जकर्याह के दर्शन 1:7–6:15; भविष्य के सम्ब**न्ध** में बोझ 9–14.
- **मलाकी -** पतित (विश्वास से भटक गए) लोगों से अपील - इस्राएल के लिए परमेश्वर की तरस (अनुकम्पा) 1:1–5; इस्राएल के **विरुद्ध** परमेश्वर की शिकायत 1:6–3:15; लोगों को परमेश्वर की पफटकार 3:16–4:6.

बाइबल कालक्रम

+ परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, उत्पनि 1–2
+ मनुष्य का पतन (पाप में गिरना). उत्पनि 3
+ नूह और जलप्रलय, उत्पनि 6–9
+ इब्राहीम, इसहाक, याक़ूब और यूसुपफ, उत्पनि 11–50
+ मिस्र में परमेश्वर की प्रजा को दासता से छुटकारा, निर्गमन 1–12
+ इस्राएल जाति का जन्म, निर्गमन 12
+ सीनै पर्वत पर व्यवस्था का दिया जाना, निर्गमन 19–24
+ कनान को जीतना (प्रतिज्ञात देश), यहोशू 6–12
+ इस्राएल में न्यायियों की **अवधी**, न्यायियों 1–21; 1 शमूएल 1–9
+ शमूएल, अन्तिम न्यायी, 1 शमूएल 1–25
+ राजा **शाउल** (प्रथम राजा) अपने राज्य का आरम्भ करता है 1 शमूएल 10
+ राजा दाऊद अपना राज्य करना आरम्भ करता है, 2 शमूएल 1–5
+ राजा सुलैमान अपना राज्य करना आरम्भ करता है, 1 राजाओं 1–3
+ पहला मन्दिर (सुलैमान का) यरूशलेम में अर्पण किया, 1 राजाओं 8
+ भविष्यद्वक्ताओं की **अवधी**, यशायाह से मलाकी
+ इस्राएल विभाजित हुआ (**उत्तर** में इस्राएल, दक्षिण में यहूदा), 1 राजाओं 12
+ अश्शूरियों द्वारा इस्राएल को **बंधुआई** (निर्वासन) में ले जाना, 2 राजाओं 17
+ बेबीलोनियों द्वारा मन्दिर का विनाश और यहूदा की बन्माुआई, 2 राजाओं 24–25
+ यहूदा का यरूशलेम वापस लौटना, एज्रा 1–10
+ दूसरा मन्दिर (जरुब्बाबेल का) अर्पण किया जाना, एज्रा 6
+ मलाकी, पुराना नियम का अन्तिम भविष्यद्वक्ता, मलाकी 1–4
+ मसीह (यीशु) का बैतलहम में जन्म लेना, मनी 2:1–12
+ यीशु का **क्रूस** पर चढ़ाया जाना, द़फनाना और पुनरुत्थित होना, यूहन्ना 19:18; 20:1–18
+ कलीसिया का जन्म (पिन्तेकुस्त), प्रेरितों के काम 2
+ मसीहियत का **फैलना**, प्रेरितों के काम 3–28

9. अनुशंसित स्रोत

उद्धार और आत्मिक उन्नति

उद्धार देखें: ''यीशु को कैसे जानें'

www.cru.org **"परमेश्वर को कैसे जाने"**

बाइबल अमययन और अनुसन्माान

www.biblehub.com बाइबल **अध्यन के लिए।**

www.biblegateway.com बाइबल **अध्यन और** बाइबल के परिच्छेदों **की खोज के लिए।**

www.blueletterbible.org बाइबल अमययन के उपकरण, ऑन लाईन सन्दभो को खोजने का पुस्ताकालय;

10. दर्शन और मिशन

दर्शन

हमारा दर्शन है कि प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उसके बादलों पर आने से पहले और बाद में भी करोड़ों लोग उणर पाए!।

मिशन

ऑपरेशन टिंबुलेशन रेस्क्यू सम्पूर्ण संसार को यीशु मसीह का शुभ सन्देश बताने के लिए मीडिया के विभिन्न रूपों का उपयोग करता है। हम उनको सज्जित करने के लिए समर्पित हैं जो पीछे छूट जाते हैं और तमाम स्रोतों को जो मानव इतिहास में सबसे बड़ी आत्मजागृति प्रभु यीशु मसीह को आदर और महिमा देने के लिए लाए!गे। हम स्वीकार करते हैं कि सुसमाचार प्रचार का सबसे प्रभावशाली तरीका आमने–सामने और **मुहं** के वचन द्वारा **उद्धार** के विषय में बताना है... सभी प्रार्थना में लवलीन हैं।

11. हमारे बारे में

अपनी बुलाहट को ध्यान में रखते हुए, उन लोगों की सहायता करने के लिए जो पीछे छुट जाएँगे, नवम्बर 2010 में, Operation Tribulation Rescue (OTR) (महाक्लेश से छुटकारे का महाकार्य) **की स्थापना की गई थी.** यह अवश्यभ्भावी है कि हम लोगों को **प्रभु यीशु मसीह के प्रथ्वी पर फिर से लौटने के विषय चेतावनी दें और उन लोगों को तयार करें जो पीछे रह गए हैं और प्रभु यीशु मसीह का प्रचार करें.** यह वैबसाइट–www.tribulationrescue.com, उपयोग किये जाने वाले उपकरणों में से एक **है, जिसके द्वारा** OTR **अपने उद्देश को पूरा कर रहा है.** बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है, ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्रा, परन्तु केवल पिता'' (मनी 24:36)।

OTR दोनों को ग्रहण नहीं करता | यह संस्था पूर्ण रूप से एक स्वमसेवी शक्ति द्वारा चलाई जाती है | यदि आप Tribulation Rescue Team में शामिल होना कहते हैं, तो हमारी वैब्सिट के "Contact/Join Us" को भरें | हमारा लक्ष्य है कि Tribulation Rescue के सदस्य सम्पूर्ण संसार में हों | क्रप्या इस सेवा के लिए, और उनके लिए जो पीछे छुट गए हैं, प्रार्थना करें |

पृष्ठभूमि

अधिकाँश लोग वास्तव में नहीं समझते कि Rapture, ''बादलों पर उठाया जाना'' क्या है। यह महज यीशु मसीह का बादलों पर आना है कि अपने सब विश्वासियों को सात **वर्षों** के महाक्लेश आरंभ होने से पहले स्वर्ग को ले जाए। हाला!कि बहुत से मसीही भविष्य में कलीसिया को बादलों पर उठा लिए जाने में विश्वास करते हैं, बहुत से यह तक नहीं सोचते कि यह किसी भी घड़ी या समय हो जाएगा। यह जानना महन्वपूर्ण है कि बादलों पर उठा लिए जाने के बाद (विश्वासियों का); **यहाँ** पृथ्वी पर छै अरब से **अधिक** लोग छूट **जायंगे** जो कि घबराए, उलझन से भरे उनरों को पाने का प्रयास करेंगे। बहुत से लोग इन्टरनेट पर स्रोतों को खोजेंगे कि यह जानें कि यह सब हुआ क्या? और वे तमाम **धोखे** की शिक्षाओं के जाल में फंस **जायंगे**।

दुर्भाग्यवश, **अधिकांश** चर्च और मसीही सेवा और वैबसाइटें ऐसी जानकारि**यां** उपलब्मा नहीं करातीं कि उनका क्या होगा जो पीछे छूट गए। इस आपात स्थिति के बारे में बाइबल स्पष्ट कहती है, ''इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्रा आ जाएगा'' **(मत्ति** 24 : 44) **यहाँ तक** कि बाइबल बार बार चेतावनी देती है, ''इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को'' **(मत्ति** 25:13) कलीसिया व्यापक रूप से इस बात से अनजान है कि ''वरन् द्वार ही पर है'' **(मत्ति** 24:33) का अर्थ क्या है? वे करोड़ों लोग जो गायब हो **जायंगे** [वास्तव में बादलों पर सदेह (सशरीर) उठा लिए **जायंगे]** उनके **बारे** में अनेक प्रकार के **सिधान्त** प्रतिपादित होंगे। उस समय जो पीछे छूट **जायंगे** उनके **हृदयों** और मनों मे सामर्थशाली भ्रान्ति आ पड़ेगी, ''परमेश्वर उनमें भटका देने वाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:11)। यीशु ने युग के अन्त के लोगों को चेतावनी दी ''सावमाान रहो' कोई तुम्हें भरमाने न पाए, क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे 'मैं मसीह **हूँ**' और बहुतों **को भरमांगे**।'' (मनी 24: 4–5)। केवल परमेश्वर का वचन, प्रार्थना, मसीह का प्रेम और पूरी हुई भविष्यद्वाणी ही इस सारे भ्रम को दूर करेगी।

हम जानते हैं कि अमिका!श लोग इस चेतावनी को न सुनेंगे कि यीशु आ रहा है। ये दिन ठीक नूह के दिनों के समान होंगे **(मत्ति** 24:37–39)। हमारे मिशन का यह भाग भी है कि अभी बीज **बोएँ** जिससे कि परमेश्वर बादलों पर उठा लिए जाने और सम्पूर्ण महाक्लेश के बाद विस्फोटक **वृधी** करे। हमारी यह प्रार्थना है कि महाक्लेश के दौरान करोड़ों लोग यीशु मसीह में विश्वास करें। यदि **सात** अरब लोगों में से **पांच** प्रतिशत लोग **उद्धार** पा लेते हैं तो यह **कई** लाख लोगों का प्रतिनिमित्व करता है। प्रभु करे कि इससे कहीं **अधिक** लोग **उद्धार** पा**यं**, क्योंकि हम जानते हैं कि प्रभु ''...नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।'' (2 पतरस 3: 9)। उनके लिए यह चुनौती भरे समय हैं जो पीछे छूट जाते हैं, ''क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरंभ से न अब तक हुआ और न कभी होगा। यदि वे दिन घटाए न जाते जो कोई प्राणी व बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएगे'' **(मत्ति** 24:21–22)। हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर इन अन्तिम दिनों में सामर्थी तरीकों से काम करेगा और यह कि 'टिंबुलेशन रेस्क्यू टीम' (महाक्लेश से छुड़ाने वाला दल) इस अन्त समय के सुसमाचार प्रचार विस्फोट**क** में अपनी भूमिका अदा करेगा और मानव इतिहास में सबसे बड़ी आत्मजागृति आएगी। हम तो अभी से उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं कि जो पीछे छूट जाएगे उन्हें प्रभु यीशु में विश्वास करके **उद्धार** पाने का अवसर भी मिल जाए। यदि आप इसे बादलों पर उठाए जाने के बाद पढ़ते हैं तो आप अकेले नहीं हैं। यीशु ने कहा, ''और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।'' **(मत्ति** 28:20)। आप निश्चयता पा सकते हैं कि आप हमारी प्रार्थनाओं में हैं। ''इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।'' (इफिसियों 6:10)।

12. सम्पर्क करें/हमारे साथ जुड़ जाए!

ऑपरेशन टिंबुलेशन रेस्क्यू के बारे में अमिाक जानकारी के लिए ई–मेल से सम्पर्क करने में झिझकें नहीं:

mail@tribulationrescue.com

क्या आप Tribulation Rescue Team के **अधिकारिकता** सदस्य बनना चाहते हैं? **तो** निम्नलिखित औपचारिकताए पूरी करने के बाद आप एक **अधिकारिक** सदस्य बन जाएगे।

1. आपको प्रभु यीशु मसीह में एक विश्वासी होना चाहिए। **यदि** आप विश्वासी नहीं है या आपको निश्चय नहीं है तो **कृप्य "मैं कैसे उणर पा सकता हूँ?** लेख पढ़ें और **उद्धार** पाए। ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू... **उद्धार** पाएगा।'' (प्रेरितों के काम 16:31)।

2. इस सेवा के लिए प्रार्थना करें और उनके लिए जो पीछे छूट जाते हैं (या **पीछे छुट** जाए**गे**)।

3. कम से कम दस लोगों को इस वैबसाइट की जानकारी **दें**।
   यदि आपने इन तीनों आवश्यकताओं को पूरा किया है **तो आपको** ब**धा**ई हो! हमें आपसे सुनकर प्रसन्नता होगी। हमें ई–मेल भेजिए।

   चेतावनी : सुरक्षा कारणों से हमें अपना असली नाम मत भेजिए

   हमें भेंजे : पहला नाम (आपका वास्तविक नाम नहीं)

   ई–मेल का पताः

   नगर :

   प्रान्त :

   देश :

यदि आप इसे Raptue विश्वासियों के बादलों पर उठा लिए जाने के बाद पढ़ रहे हैं तो मूल रूप से इस संस्था का कोई नाम नहीं होगा। तथापि, हम प्रार्थना कर रहे होंगे कि परमेश्वर ऐसे व्यक्तियों को उठाए जो Oepration Tribulation Rescue के दर्शन और मिशन को आगे ले जाए।